मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

परिचर्चा
"मारवाड़ी समाज कल-आज और कल" में भाग लेवें।

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸अगस्त २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ८

कोलकाता में महाराणा प्रताप की 13 फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा का लोकार्पण

संगोष्ठी

उभरती प्रतिभाएं - गिरते मूल्य किसको श्रेय - कौन दोषी

मंच पर बायें से– राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार,
सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री बजरंग जालान,
सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, सम्मेलन के पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा,
जालान बालिका विद्यालय के अध्यक्ष श्री तोलाराम जालान एवं सचिव श्री नन्दलाल सिंघानिया

सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय की छात्रा सुश्री जूही तिवारी संगोष्ठी में अपने विचार देते हुए।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦अगस्त २००९ ✦वर्ष ५९ ✦अंक ०८ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
परिचर्चा में भाग लें	५
अखिल भारतीय समिति की बैठक की सूचना	७
अपनी बात – शम्भु चौधरी	८
अध्यक्षीय – नन्दलाल रुँगटा	९
''अन्तर्जातीय विवाह'' एक चिन्तन का विषय : राम अवतार पोद्दार	१०
जंतर–मंतर – सीताराम शर्मा	११
वार्षिक साधारण सभा	१२–१३
संगोष्ठी : अपनी मौलिकता नहीं भूले नई पीढ़ी : रुँगटा	१४–१५
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ	१६–१७
धर्म–निरपेक्षिता (सेकुलरिज्म) लील रही है – जुगलकिशोर जैथलिया	१८
कविता :	
तिरंगे का दर्द : जय कुमार रुसवा	१९
नये संरक्षक सदस्यों की सूची	२०–२१
नये आजीवन और विशिष्ट सदस्यों की सूची	२३–२४
राजस्थानी रीति रिवाज एवं उनका रहस्य – इन्द्रचंद्र महरीवाल	२५
''इस युवा जनादेश में बुजुर्गों का आशीर्वाद है'' : त्रिलोकीदास खण्डेलवाल	२६–२७
श्रद्धांजलि : बाबूलाल बोहरा : एक प्रेरक व्यक्तित्त्व – प्रो. रामपाल अग्रवाल 'नूतन'	२८
घनश्यामदास सराफ ट्रस्ट का ५०वां सुनहरा वर्ष	२९
भारतीय संसदीय गणतंत्र – महामहिम राज्यपाल श्री गोपालकृष्ण गाँधी	३०–३२
पूरे देश में पूजनीय हैं महाराणा प्रताप – जनरल शंकर रायचौधरी	३३–३४
युगपथ चरण :	
शिक्षा व्यवसाय बनती जा रही है – रुँगटा	३५
सदस्यता विवरण फार्म	३६–३७
श्रद्धांजलि : संग्रामी नेता–सुभाष चक्रवर्ती को	३८
कन्हैयालाल सेठिया के जन्मदिन पर विशेष	३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है :

राजस्थानी के लिए मार्ग-निर्धारण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने अपने संगठन के मुखपत्र **'समाज विकास'** के जून–२००९ के अंक के 'अध्यक्षीय' में 'मातृभाषा राजस्थानी' शीर्षक से सही कहा है कि ''यदि हम'' राजस्थान विधान सभा के ''संकल्प रूपी प्रस्ताव की गंभीरता पर विचार करें तो हम पाते हैं कि यह प्रस्ताव खुद में अपूर्ण और विवादित है, और उनके इस विषय के मंतव्य उचित हैं। उनके इस कहने में कि ''हम चाहते हैं कि राजस्थान सरकार अपनी बात को तार्किक रूप से स्पष्ट करे कि वो आखिर में केन्द्र सरकार से चाहती क्या है'' अपने आप यह प्रकट और सिद्ध होता है कि राजस्थानी का एक स्वरूप अभी तक सुनिश्चित नहीं है, जिसे श्री रूंगटा ने सही पकड़ा है, ''इस प्रस्ताव से ही राजस्थान में चल रहे भाषा विवाद की झलक मिलती है।''

एक और राजस्थान का यह असमंजस है, दूसरी ओर यह है कि उपर्युक्त संकल्प को स्वीकार कराने वाली राज्य सरकार और स्वीकार करने वाली विधानसभा आरम्भ से और इस संकल्प की स्वीकृति के उपरान्त भी अपने कामकाज के लिए हिन्दी का ही उपयोग करती है। यही नहीं, जब स्वतंत्रता के पहले यहां की रियासतों को अपने कार्यकलाप का माध्यम चुनने की स्वतंत्रता थी सभी औपचारिक व्यवहार में हिन्दी का उपयोग करते थे। और उनसे स्वायत्त शासन एवं स्वतंत्रता जीतने वाले संगठन, पहले देशी राज्य लोक परिषद, फिर प्रान्तीय कांग्रेस, भी अपनी कार्रवाई में हिन्दी का ही उपयोग करते थे। इसमें यह और जोड़ें कि राजस्थान से बाहर राजस्थानियों का विशाल, विस्तृत तथा स्वायत्तशासी संस्थान है, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, वह भी हिन्दी का उपयोग करता है। राजस्थानियों द्वारा संचालित उद्योगों के उत्पाद पर जो नाम एवं विवरण रहते हैं उनमें भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी का उपयोग किया जाता है सिवाय उन उत्पादों के जिनका प्रचलन तो सीमित क्षेत्रों में है, वहाँ की बोली काम में लायी जाती होगी, जैसे बंगाल या कर्नाटक में। परन्तु राजस्थान में तो ऐसा भी नहीं होता, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि में बनने वाली चीजों पर नाम आदि किसी प्रकार की राजस्थानी में नहीं, हिन्दी में रहते हैं। यह अनुचित ही नहीं, स्वाभाविक न्याय के विपरीत होता है, और यह वर्तमान की दृष्टि से व्यवहार विहीन तथा भविष्य की दृष्टि से हानिकारक है कि जिस भाषा का उपयोग स्वयं नहीं किया जा रहा, उसका प्रतिपादन दूसरों के लिए, देश के लिए, किया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय ने भी, और इसी अंक में प्रो. रामपाल अग्रवाल 'नूतन' ने राजस्थान का भौगोलिक वर्णन दिया है। जिस क्षेत्र को 'बालू के आधिक्य वाला' कहा गया है, उसके बारे में यह भी कहा गया है कि यह 'पूरा राजस्थान नहीं है।'' जो बाकी बचा राजस्थान है उसमें मेवाड़ की वीर एवं पवित्र भूमि भी है तथा उसी को गौरव है मीरा और प्रताप प्रदान करने का। इसके अतिरिक्त भी विस्तृत क्षेत्र हैं, उसकी भाषा–संस्कृति–वेश–व्यवहार–अभिकृति सब कुछ बालू के आधिक्य वाले प्रदेश से भिन्न है। राजस्थान में भाषा की ही नहीं हर प्रकार की विविधता है, इतिहास और भूगोल की भी, पहनावे और तीज–त्यौहार की भी। प्रश्न यह है कि एक केवल भाषा की एकरूपता का आग्रह क्यों है, यह क्या व्यावहारिक और उचित है? क्या संभव है? जब कुछ एक–सा नहीं है, एक–सा नहीं हो सका है, कैसे केवल भाषा एकरूप हो सकती है? न है, न होनी चाहिये, न होने वाली है, न उपर्युक्त संकल्प के बाद हुई है। यह अंदाज सही नहीं है कि ''अरावली पर्वत के पूर्व और पश्चिम में समान रूप से समझी, बोली और लिखी जाती'' कोई एक भाषा है।

इसके साथ जुड़ी यह स्थिति है कि राजस्थान के विभिन्न भागों से निकले लोग राजस्थान के बाहर जाने पर जैसे अपने नये क्षेत्र की भाषा अपनाते हैं, उसी प्रकार से अपने मूल प्रदेश की भाषा भी नहीं छोड़ते। जोधपुर, बीकानेर से आने वाले क्या वैसी ही भाषा आपस में बोलते हैं जैसी उदयपुर–भरतपुर–अलवर से निकलकर जाने वाले। उत्तर राजस्थान की परिधि में ही नहीं, जहाँ राजस्थानी रहते हैं वहाँ सब जगह है।

अध्यक्ष महोदय ने आग्रह किया है कि ''हम सभी राजस्थानी भाषा–भाषियों को एकजुट होकर एक स्वर में राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिये।'' इसका अर्थ क्या यह नहीं होता कि पहले प्रयत्न हो, फिर उस प्रकार के परिणाम की अपेक्षा हो। अध्यक्ष महोदय ने स्वयं कहा है, ''इस प्रयास से ही राजस्थान में चल रहे विवाद की झलक मिलती है।'' इस झलक के तत्त्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती, और इसके सुलझाये बिना जो सुलझ ही नहीं सकता–भाषा के एकीकरण एवं उसकी स्वीकृति का आग्रह स्वीकार्य नहीं हो सकता। इसके अब तक स्वीकार नहीं होने का यही तत्त्व है, और राजस्थानी भाषा की निकट भविष्य में आठवीं अनुसूची में लिए जाने की पूरी–पूरी संभावना हैं, तो इसे ऊपर वर्णित स्थिति में समुचित नहीं माना जायगा। किसी स्थिति का अभिव्यक्ति का होना ही उसका औचित्य निर्धारित नहीं करता।

अध्यक्ष महोदय ने तथा इस अंक के अन्य लेखों में वीरगाथा काल से अब तक के राजस्थानी साहित्य की विवेचना की गयी है। इस पर आपत्ति की बात नहीं है, और बहुत कुछ है जो इसमें जोड़ा जा सकता है। परन्तु प्रश्न अतीत का नहीं है। जो स्थिति इस समय है सामना उसका करना होगा, और भविष्य को पूरी तरह ध्यान में रखना होगा। साहित्य में जो आता है, उससे अतिरिक्त आधुनिक एवं विकासोन्मुख ज्ञान–विज्ञान–शोध–तकनीक आदि सभी की संभावनाएं और आवश्यकताएं हैं। हिन्दी को राष्ट्र

भाषा बनाकर भी हम उसे पर्याप्त रूप से समर्थ नहीं कर सके, तभी संविधान के प्रावधान के उपरान्त भी उसे उचित स्थान नहीं मिला है। राजस्थानी तो कई स्वरूपों में स्वत: विभक्त है। क्या जो ''भाषा या बोलियां'' विधानसभा के संकल्प में गिनायी गयी है, उन पर सब में आधुनिक अपेक्षाओं के अनुरूप रचनाएं हो सकेंगी? राजस्थानी ने अपने सभी स्वरूपों में हिन्दी को समृद्ध करने में यशस्वी योगदान किया है। यह मातृवत व्यवहार होता है। माता को पुत्री से स्पर्धा नहीं करनी चाहिये। राजस्थानी का अतीत रहा है, इस समय बहुत विस्तार से उसका प्रचलन है, और भविष्य में न उसका स्वरूप मिटने वाला है, न संभावनाएं। और कुछ नहीं तो तब तक तो प्रतीक्षा की ही जाय जब तक राजस्थानी है। (१) सब जगह, सब उपयोगों में, एक स्वरूपता नहीं होती और (२) इतनी बहुविध समर्थ नहीं होती कि आधुनिकता का भार पूरी तरह उठा सके।

मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष आदरणीय ही नहीं, नियामक होता है। हिन्दी के लिए वहीं स्थिति स्वीकार्य, समुचित तथा परिणामप्रद होगी जिसे उनके नेतृत्व में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने स्वीकार तथा उपयोगार्थ कर रखा है।

– राजेन्द्र शंकर भट्ट
स्फटिक, 3, जयाचार्य मार्ग, रामनिवास बाग
जयपुर–302004, राजस्थान

नि:शुल्क आँख परीक्षण, चश्मा वितरण, आँख ऑपरेशन
(आई, ओ.एल., माइक्रो सर्जरी)

रविवार, 6 सितम्बर, 2009

प्रधान डॉक्टर

नेत्र सर्जन डा. रजनी सराफ एवं
उनकी चिकित्सकीय टीम

:: आयोजक एवं स्थान ::

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

152–बी, महात्मा गांधी रोड (2 तल्ला)
कोलकाता – 700 007
दूरभाष : (033) 22680319

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं:–

राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
मोबाईल – 9830019281
ओमप्रकाश पोद्दार, पूर्व पार्षद
मोबाईल – 9830161611
संजय हरलालका, संयुक्त महामंत्री
मोबाईल – 9830083319
विश्वनाथ भुवालका
मोबाईल – 9330132222
ओमप्रकाश अग्रवाल
मोबाईल – 9831067659

परिचर्चा
''मारवाड़ी समाज कल–आज और कल''

◆सम्मेलन के स्थापना दिवस के अवसर पर 'समाज विकास' पत्रिका का एक विशेषांक निकाला जायेगा। इस अवसर पर हम पिछले साल की भांति पुनः एक परिचर्चा का आयोजन कर रहे हैं।

गत वर्ष कुछ पाठकों ने हमें पत्र दिए थे कि– ''यदि उन्हें भी परिचर्चा की जानकारी होती तो वे भी परिचर्चा में हिस्सा ले पाते'' चूँकि गत वर्ष हमने कुछ चुने हुए लेखकों को ही परिचर्चा में शामिल किया था, जिनमें से कुछ को सूचना विलम्ब से मिलने के कारण वे भाग नहीं ले सके थे। अतः इस बार हम 'समाज विकास' पत्रिका के माध्यम से आप सभी बुद्धिजीवी, लेखकों और पाठकों से अनुरोध करते हैं कि उपरोक्त विषय पर आप अपना लेख (अधिकतम 700 शब्दों में) लिखकर, अपने संक्षिप्त परिचय एवं रंगीन पासपोर्ट साईज फोटो के साथ संपादक के पते पर 15.10.2009 तक जरूर से भेज देंवे। कृपया ध्यान रखें कि विलम्ब से प्राप्त लेखों को प्रकाशित करना संभव नहीं हो सकेगा। अतः हमारा आपसे अनुरोध रहेगा कि आप अपना लेख अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक जरूर से पोस्ट कर दें।

नोटः यदि आप किसी अन्य सामाजिक विषय पर परिचर्चा करवाना चाहते हों तो कृपया आप अपने विषय से हमें अवगत करायें। जिनका विषय अधिक उपयुक्त और सामयिक होगा, कोलकाता शहर में हम उक्त चुने गये विषय पर गोष्टी का आयोजन करने का प्रयास करेंगे।

-शम्भु चौधरी, कार्यकारी संपादक
मोबाइलः ९८३९०८२०३७

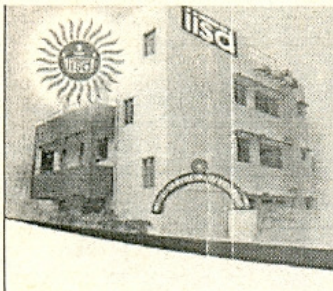

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

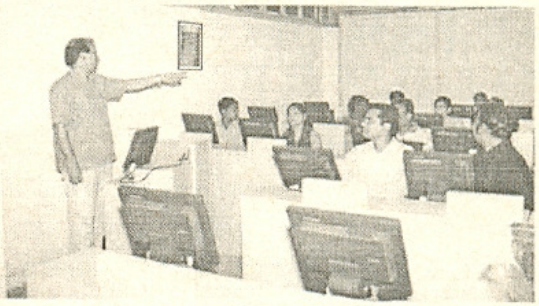

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies Act XXVI of 1961)
152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

दिनांक : १८ अगस्त ०९

सूचना

सभी अखिल भारतीय समिति सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नव–गठित अखिल भारतीय समिति में आपके निर्वाचन/मनोनयन पर हमारी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं स्वीकार करें। सम्मेलन की इस सर्वोच्च नीति–निर्धारण समिति की सदस्यता के माध्यम से सम्मेलन को आपका दिशा–निर्देश एवं सहयोग सदैव प्राप्त होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

नव–गठित समिति की प्रथम बैठक **पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के आतिथ्य में आगामी रविवार, १३ सितम्बर २००९ को प्रातः ११ बजे से, **साल्टलेक सांस्कृत संसद भवन**, सी.ए.–४९, साल्टलेक, सेक्टर–१, कोलकाता–७०००६४, निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा करेंगे।

उक्त बैठक में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है। अपने पहुंचने की पूर्व सूचना कृपया

श्री नन्द किशोर अग्रवाल, अध्यक्ष स्वागत समिति
2ए, मोतीलाल बासाक लेन, काकुरगाछी, कोलकाता–700054,
मोबाईल – 9830106161

एवं सम्मेलन को भेजकर आयोजन में सहयोग प्रदान करें।

संविधान के प्रावधान के अनुसार आप **अखिल भारतीय समिति** की सदस्यता शुल्क के मद में २००/– (दो सौ रुपये) सम्मेलन के कोलकाता स्थित राष्ट्रीय कार्यालय में भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही एक विवरण पत्र भी आपको भेजा जा रहा है जिसे भरकर दो पासपोर्ट साईज रंगीन फोटो सहित शीघ्र सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करें ताकि आपका पूरा विवरण फोटो सहित सम्मेलन द्वारा प्रकाशित होने वाली डायरेक्टरी में दिया जा सके।

आदर सहित–

आपका

रामअवतार पोद्दार
(राष्ट्रीय महामंत्री)

विचारार्थ विषय :–

१. अध्यक्ष का उद्‌बोधन।
२. गत् बैठक की कार्यवाही पारित करना।
३. महामंत्री की रपट।
४. सम्मेलन के वित्तीय वर्ष २००८–०९ के आय–व्यय का लेखा परीक्षक द्वारा जांचा गया लेखा–जोखा प्रस्तुत करना।
५. कौस्तुभ जयंती पर विचार।
६. सामाजिक विषयों पर परिचर्चा।
७. संगठन पर विचार–विमर्श।
८. विविध– अध्यक्ष की अनुमति से।

अपनी बात :

मेरे राजस्थानी प्रेमी दोस्तों!

१५ अगस्त को जब **''मिले सुर मेरा–तुम्हारा, सुर बने हमारा''** गीत गाया जा रहा था, तो समूद्री लहरों की तरह मेरे मन में काफी उथल–पुथल होने लगा। हमारे देश में कितनी विविधता है। प्रत्येक राज्य की अपनी अलग–अलग कला–संस्कृति, साहित्य, भाषा, वेश–भूषा, बोली, पहनावे, खान–पान, रहन–सहन, लोगों के अलग–अलग धर्म न जाने क्या–क्या, पर सबको एक ताल–सुर और स्वर में थिरकते देखा जा सकता है। एक समय रुस में इसी प्रकार छोटे–छोटे प्रान्त थे, परन्तु उसके बिखराव को कोई चाहकर भी नहीं रोक पाया। सारी की सारी शक्ति विफल हो गई, इसका राजनैतिक पहलू जो भी रहा हो मेरी दृष्टि में एक कारण यह भी था कि वहाँ के साहित्य–संगीत में बिखराव की बातें ज्यादा थी। जबकि भारत में जो गीत–संगीत, गाये–बजाये जाते हैं, भले ही वे किसी भी भाषा में क्यों न हो उनसे कहीं न कहीं हमें एक सूत्र में जोड़े रखने की प्रेरणा मिलती रहती है। किसी भी प्रान्त की भाषा के साहित्य को लेकर देखा जाय तो उसमें भारतीय संस्कृति का अमृत घुला मिलता है। हम जब पूरब देशों की तरफ एक नजर डालते हैं जैसे– जापान, चीन, आस्ट्रेलिया। जापान में हमें सिर्फ जापानी संस्कृति ही देखने को मिलती है, उसी प्रकार चीन और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी अपने–अपने देश की एक ही प्रकार की मिलती–जुलती प्राय: एक सी ही संस्कृति पाई जाती है। चीन में तो एक धर्म–संस्कृति रहते हुए भी कई मतान्तर उभरकर सामने आये हैं। तिब्बतियन की बात को लें या ताईवान की आजादी, कहीं न कहीं कोई कमजोर तार है जो इन्हें आपस में एक दूसरे से अलग करता है। जब अपनी तरफ नजर डालते हैं, भारत विभाजन के समय की बातों को याद करते हैं कि राजनैतिक कारणों के अलावा और क्या–क्या कारण हो सकते हैं जिन्होंने हमारी एकता को कमजोर कर देश के दो टूकड़े करने पर हमें विवश कर दिया था, तो उसमें सबसे बड़ा एक कारण जो हमारे सामने आता है वो है धर्म। परन्तु धर्म के आधार पर विभाजन के बाद भी हमारी संस्कृति, न तो उन्हें हमसे अलग कर पाई, न ही हमें उनसे। जबकि पास के ही देश अफगानिस्तान की संस्कृति से एक धर्म होते हुए भी पाकिस्तान आजतक नहीं जुड़ पाया। एक धर्म होने पर भी बंगलादेश, पाकिस्तान से अलग हो गया।

कहने का अभिप्राय यह है कि धर्म कहीं भी किसी देश को जोड़ने में कभी भी कोई महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाया है। चाहे रुस की बात लें, चीन या भारत–पाकिस्तान–बंगलादेश की बात को सामने रखें।

मूल तत्त्व है जो हमें एक सूत्र में जोड़े रखता है वो है हमारी भारतीय संस्कृति और इस संस्कृति को जोड़े रखता है इस देश का साहित्य और संगीत। जो कभी भी कहीं से जब हम कमजोर दिखते हैं या तीसरी कोई शक्ति इसे तोड़ने का प्रयास करती है तो चारों तरफ से साहित्य अपनी कलम से हमला कर देती है अन्त में इस तरह के तत्त्वों को दम तोड़ने के अलावा दूसरा कोई विकल्प ही नहीं बचता।

कई बार हमने देखा कि 'हिन्दी' को लेकर कुछ प्रान्तों में विवाद हुए। हिन्दी के बैनर फाड़े गये। हिन्दी बोलने वालों को मारा–पिटा भी गया। परन्तु जब सारा देश एकजुट हो इस तरह के तत्त्वों पर हमला करने लगता है तो, वे ही लोग हिन्दी सीखने की बात करने लगते हैं। तामिल, आंध्रा, महाराष्ट्र या बंगाल सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि हिन्दी भाषा में अनुवाद के बिना उनका साहित्यिक कार्य अधूरा है।

पिछले दिनों राजस्थानी भाषा की मांग को लेकर कुछ आन्दोलनकारियों ने यह लिखना शुरु कर दिया कि राजस्थानी भाषा की सबसे बड़ी दुश्मन हिन्दी ही है। अत: वे हिन्दी का बहिष्कार करते हैं। मजे की बात ये थी कि जो लोग हिन्दी का बहिष्कार कर रहे थे, वे अपनी बात को कहने के लिये या तो देवनागरी लिपि का प्रयोग कर रहे थे या फिर अंग्रेजी में अपनी बात कह रहे थे। मैंने उन लोगों से पूछा कि क्या आप राजस्थानी की लड़ाई अंग्रेजी का सहारा लेकर करना चाहते हैं तो जवाब में उनका एक मेल अंग्रेजी में आया। जिसमें हिन्दी पर सारा दोष मढ़ते हुए कहा कि हिन्दी भाषा ही सबसे बड़ी बाधक है राजस्थानी भाषा की मान्यता के रास्ते में। जब मैंने उनसे पलटवार किया कि आप जो राजस्थानी लिख रहे हैं वो किस लिपि का सहारा लेकर लिख रहे हैं? तो, जवाब में उनका हिन्दी में मेल आया कि वे अपनी बात को सुधारते हैं। मेरे राजस्थानी प्रेमी दोस्तों! आप और हम जिस राजस्थानी भाषा की लड़ाई या मान्यता की वकालत कर रहे हैं, उसके प्रति हम अभी तक सही दिशा में कार्य करते नजर नहीं आ रहे। नहीं तो राजस्थानी जैसी समृद्ध भाषा को संसद की मंजूरी न मिले ऐसी कोई बात नजर नहीं आती। हम भले ही राजस्थान की समस्त बोलियों को राजस्थानी मानते हों, इसमें किसी को कहाँ विवाद है यह तो अटूट सत्य है कि राजस्थान के विभिन्न जिलों में बोली जाने वाली भाषा या बोलियाँ यथा ब्रज, हाड़ौती, बागड़ी, ढूँढाड़ी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, मालवी, शेखावाटी आदि सभी राजस्थानी भाषा ही है, इसे राजस्थान का गुलदस्ता कह दें यह भी सच है कि हमें सभी बोलियों से प्यार है। सभी हमारी मातृभाषा है। परन्तु हमारी भावना से समाधान कदापि नहीं निकल सकता। विधानसभा या संसद के भीतर इतनी सारी बोलियों को एकत्रित कर उनके लिए अलग–अलग ट्रांसलेटर रखना कादापि संभव नहीं हो सकता। विभिन्न जिलों की अदालतों के लिये भी यह कदापि संभव नहीं होगा कि वे राजस्थान की अलग–अलग बोली के लिए अलग–अगल अनुवादक रख पाये। राजस्थान के साहित्यकारों को यह सोचना होगा कि वे इस बात का समाधान किस प्रकार निकालते हैं। जब तक हम किसी एक मत पर नहीं पहुँच पाते या सभी बोली के विद्वान एक साथ बैठकर कोई नया विकल्प नहीं खोज लेते हम राजस्थानी भाषा को किसी भी सम्मानजनक स्थान पर नहीं पहुँचा सकते। भले ही चाहे कोई कुछ भी सोचे, हमें अन्त में व्यवहारिक दृष्टिकोण पर विचार करना ही होगा। ◆

– शम्भु चौधरी

अध्यक्षीय :

युवा पीढ़ी- सामाजिक सहिष्णुता

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

यह एक ऐसा विषय है जिसे सिर्फ मारवाड़ी समाज तक सीमित रखना संभव नहीं है। विश्व बाजार व्यवस्था ने जो चुनौतियां प्रस्तुत की हैं उससे हमारा समाज भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है। इन चुनौतियों के फलस्वरूप समाज के सामाजिक मूल्यों में काफी कुछ परिवर्तन घटा है।

एक समय था जब, हमारे पास न तो शिक्षा के इतने विकल्प थे, न ही व्यवसाय के। संयुक्त परिवार में एक साथ जीवन का आनन्द उठाते–खेलते थे। माता–पिता, नाना–नानी, चाचा–ताऊ का परिवार तो अपना सा ही था, बच्चे एक दूसरे से इतने हिल–मिल जाते थे कि कई बार आपस में बिछुड़ना संभव नहीं होता। परिवार में बड़े से बड़ा विवाद हो या छोटे से छोटा विवाद, घर का बड़ा (मुखिया) जो कह देता था उसे स्वीकार किया जाता था। जिस सहनशीलता के साथ घर की औरतें रह लेती थी आज उनमें भी इस सहिष्णुता का अभाव नजर आता है। जिसका सीधा प्रभाव हमें हमारे बच्चों में देखने को मिलता है।

जैसे–जैसे संयुक्त परिवार में बिखराव होता गया, या यूँ कह दें कि एकल परिवारों की संख्या बढ़ती गई, हमने महसूस किया है कि बच्चों में सहिष्णुता धीरे–धीरे समाप्त हाने लगी। माँ–बाप तक पराये से लगने लगे हैं। जिस दहलीज पर हमारा समाज आज खड़ा है वहाँ पर कई परिवारों को तो पुस्तैनी कारोबार तक बन्द कर देने की नौबत दिखाई देने लगी। परिवारिक पुस्तैनी कारोबार जो दादा–परदादा के समय से चलता आया है, अब कई परिवार में यह संकट देखने को मिल रहा है कि इन कारोबार की संयुक्त देखभाल करने के लिये घर के बच्चे किसी भी रूप में तैयार नहीं हैं। यह समस्या सिर्फ कारोबार तक ही सीमित हो तो कुछ हद तक परिवार इसे स्वीकार कर ले, परन्तु जिस तेजी से एकल परिवार के अन्दर भी परिवार टूटता जा रहा है, उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि यह एक खतरनाक स्थिति का बयान कर रही है। हमारी भारतीय संस्कृति किसी न किसी रूप से कहीं से कमजोर होती दिखाई दे रही है।

हम लाड़–प्यार–चाव से बच्चों को बड़ा करते हैं, पालते–पोसते हैं। परन्तु कई बार तो ऐसा लगता है कि आखिर हम किस दिन के लिये ये सब कर रहे थे? वृद्धाश्रम की बढ़ती मांग ने हमारे भारतीय समाज के ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर दिया है, हालांकि हमें यह बताना भी जरूरी है कि वर्तमान का जो काल चल रहा है, इसमें एक साथ दो पीढ़ी का मिश्रण हमें देखने को मिलता है, जिसमें एक–वो पीढ़ी जो एकल परिवार के रूप में बड़ी तेजी से सामने आयी। उस समय चर्चा इस बात की थी कि संयुक्त परिवार के विघटन के दर्द को कैसे कम किया जाय। दूसरी– आज की नई पीढ़ी जिन्होंने एकल परिवार के अन्दर भी परिवार में विघटन को देखने के लिये हमें मजबूर कर दिया है। इस बिखरते ताने–बाने के लिये हम किसे दोष दें–किसे नहीं? यह हमारी समझ से परे होता जा रहा है। गिरते सामाजिक मूल्यों एवं अर्थ के बढ़ते प्रभाव ने आपसी प्रेम, एक–दूसरे के प्रति आदर एवं सहिष्णुता को इतना प्रभावित किया है कि परिवार टूटते नजर आ रहे हैं।

बाजार व्यवस्था, प्रतिस्पर्द्धा की होड़, ऐन–केन प्रकारेण सफलता प्राप्त करने की दौड़, सामाजिक–नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट, **''बाप बड़ा न भैय्या, सबसे बड़ा रुपैया,''** की भावना ने घर–घर के पारिवारिक ढाँचे को झकझोर दिया है। बड़ों के प्रति आदर में लगातार कमी आ रही है, संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, एकल परिवार जिन्दगी से लड़ते नजर आ रहे हैं, पारिवारिक प्रेम का नितान्त अभाव आपसी सम्बन्धों को कृत्रिम रूप देता दिख रहा है। इस तनावपूर्ण मानसिक स्थिति ने समज में असहिष्णुता के एक ऐसे माहौल को जन्म दिया है जिसके चलते बाप–बेटे, भाई–भाई के सम्बन्धों की मिठास में कमी आ रही है। जीवन पारस्परिक प्रेम आदर एवं सम्मान के आधार पर एक समझौता है। हमारी प्रतिभाशाली युवा पीढ़ी ने शिक्षा, उद्योग–व्यवसाय, साहित्य, कला, संस्कृति सभी क्षेत्रों में असाधारण सफलता अर्जित की है, यह हमारे लिये गौरव का विषय है। इस सफलता की दौड़ में युवा पीढ़ी अपने समाज की उक्त भूलभूत खूबियों– सामाजिक मूल्य, पारिवारिक रिश्ते, भाईचारा, बड़ों का सम्मान, आदि–को खोता जा रहा है। सामाजिक सहिष्णुता का अभाव एक बड़ी समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है, जिससे युवा पीढ़ी को उबरना होगा।◆

''अन्तर्जातीय विवाह''
एक चिन्तन का विषय

- राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

दिनांक ११ जुलाई २००९ को कोलकाता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में ''अन्तर्जातीय विवाह कुछ अनुभव'' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किया गया। आयोजन में दो अन्तर्जातीय जोड़ों ने अपने अनुभव पर प्रकाश डाला। इनमें से एक महिला ने कहा कि उसने अपने माता–पिता की अनुमति हेतु सात वर्ष तक इन्तजार किया तथा विवाह के बाद हम बहुत खुश हैं।

इस गोष्ठी के बाद हमें बहुत सी प्रतिक्रिया मिली जिसमे पूछा गया कि क्या सम्मेलन ''अन्तर्जातीय विवाह'' को प्रोत्साहित करना चाहता है? इस प्रश्न को लेकर कार्यकारिणी समिति की सभा में भी कुछ सदस्यों ने भी कुछ प्रश्न किए। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने गोष्ठी शुरू होने के साथ ही अपने सम्बोधन में इसे साफ कर दिया था कि सम्मेलन कतई ''अन्तर्जातीय विवाह'' के पक्ष में नहीं है। यह एक समाज की ज्वलंत समस्या है। इस पर चिन्तन की आवश्यकता है।

समाज के एक वर्ग द्वारा आई प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में मैं कहना चाहूँगा कि सम्मेलन ''अन्तर्जातीय विवाह'' के प्रचार–प्रसार की कतई इच्छा नहीं रखता है। सम्मेलन इसके पक्ष में नहीं है। सम्मेलन का सिद्धांत समाज सुधार एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों के लिये समाज के लोगों में जागृति लाना है। इसके लिए सम्मेलन की स्थापना के समय से ही सुधार हेतु हमारे बुजुर्गों ने आन्दोलन चलाया। आज उसी की देन है कि पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, बालिका शिक्षा जैसी कुरीतियों से निदान मिला।

हमारे यहां कुछ वर्ष पहले तक अग्रवाल–ब्राह्मण–ओसवाल–जैन तक में आपस में विवाह नहीं होता था। यह बाध्यता अब कुछ हद तक मिट चुकी है परन्तु प्रेम विवाह को अभी भी समाज ने स्वीकार नहीं किया है चाहे वह सह–जातीय ही क्यों न हो। हमें इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिये। अब तक लड़कियों को किसी भी खूंटे से माँ–बाप बांध देते थे और वह वहीं चली जाती थी लेकिन अब समय बदल गया है। लड़कियाँ, लड़कों से किसी भी मायने में कम नहीं है। मेरा अनुभव है कि लड़कियाँ पढ़–लिखकर अपने योग्य वर खोजती हैं, समाज में योग्य वर न मिलने की अवस्था में उनका झूकाव अन्य जाति की तरफ होने लगता है। शिक्षा के दौरान हुए इस मेल–मिलाप को, माँ–बाप स्वाभाविक तौर पर स्वीकार करने से इंकार करते हैं। जहाँ शुरू हो जाता है परिवार में तनाव।

मैं एक सजातीय प्रेम विवाह का उदाहरण दे सकता हूँ जिसके आर्थिक मुद्दों के कारण इसको लेकर घर में तनाव पैदा हुआ है। मेरा एक बहुत सम्पन्न परिवार से घनिष्ठ प्रेम है। परिवार की लड़की को इन्टरनेट में एक लड़के से प्रेम हो गया। लड़का सामान्य परिवार का था। दोनों अलग–अलग शहरों में रहते थे परन्तु जैसे–जैसे निकटता बढ़ती गई। लड़का–लड़की एक दूसरे से मिलने भी लगे। जब लड़की के परिवार को इसका पता लगा तो कोहराम मच गया। माता–पिता किसी भी हालत में तैयार नहीं हो रहे थे और लड़की का कहना था मुझे पैसे से विवाह नहीं करना है मैं तो इसी लड़के से विवाह करूँगी अगर आप लोग नहीं मानेंगे तो मैं लड़के के साथ मंदिर में शादी कर लूंगी। बात बिगड़ती ही गई। घर के सब लोग समझाकर थक गये। इस परिवार से मेरी घनिष्ठता की वजह से उसके माता–पिता मेरे पास आये। मैंने सुझाव दिया कि बात सर से ऊपर चली गई है इसका समाधान यही है कि सामाजिक विवाह कर दिया जाय। बहुत समझाने के बाद वे राजी हुए परन्तु उन्होंने कहा कि हम कन्यादान नहीं करेंगे क्योंकि इसमें हमारी समाज में बदनामी होगी कि हमने अपनी लड़की का सम्बन्ध अपने से निम्न स्तर के परिवार में किया है। अन्त में विवाह दूसरे शहर में जाकर कराया गया। वहां मेरे समझाने पर कन्यादान भी माँ–बाप ने ही किया। आज लड़का–लड़की बहुत खुश हैं तथा आर्थिक स्थिति पहले से बहुत अच्छी है।

मेरे कहने का मतलब है कि हमें परिस्थितियों पर चिन्तन करना चाहिये। समय बदल गया है। बच्चें हायर–एजुकेशन में जा रहे हैं, को–एजुकेशन में पढ़ रहे हैं घर का वातावरण पहले जैसा नहीं हैं। दिन–रात टी.वी. देखते हैं उसमें क्या परोसा जाता है किसी से छिपा नहीं है। माँ–बाप खुद बच्चों के साथ बैठकर सिनेमा, टी.वी. देखते हैं। घर पर उसके बारे में चर्चा होती है। कम्प्यूटर युग आ गया है। बच्चे छोटी उम्र से ही कम्प्यूटर पर गेम खेलना शुरू कर देते हैं। माँ–बाप उनको रोकते नहीं हैं। उनको टी.वी व सिनेमा से कैसे संस्कार मिल रहे हैं इसके बारे में सोचने का किसी के पास समय नहीं है ऐसी अवस्था में समाज को इस पर चिन्तन करना चाहिए या नहीं?

इसी चिन्तनीय अवस्था को देख कर ही अ.भा.मा.सम्मेलन ने इस विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया, क्या यह उचित नहीं है? इस विषय पर अगर कोई सुझाव आता है तो हमें खुशी होगी।◆

राज्यपाल गोपालकृष्ण गांधी की पुस्तक पर आधारित

गाँधी, कोलकाता एवं मारवाड़ी समाज

- सीताराम शर्मा

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल एवं महात्मा गांधी के पौत्र श्री गोपाल कृष्ण गांधी की ५८४ पृष्ठीय पुस्तक **''ए फ्रेंक फ्रेंडशिप; गांधी एण्ड बंगाल : ए डिस्क्रीपटीक – क्रोनोलाजी''** बंगाल एवं गांधी के सम्बन्धों पर एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसके सम्पादन में गोपाल गांधी की विद्वता साफ झलकती है।

१८९६ में २६ वर्ष की आयु में गांधी जी ने बंगाल की पहली यात्रा की। अगले ५१ वर्षों में, अपनी १९४७ की अन्तिम बंगाल यात्रा तक, गांधीजी ६४ बार बंगाल पधारे एवं यहां ५६६ दिन व्यतीत किये। अपनी इन यात्राओं के दौरान गांधीजी का कोलकाता के मारवाड़ी समाज एवं संस्थाओं से कई बार सम्पर्क हुआ।

जैन सभा : ३१ दिसम्बर १९१७ को गांधीजी श्वेताम्बर परिषद द्वारा आयोजित जैन सभा की बैठक को सम्बोधित करते हैं। सभा की अध्यक्षता करते हैं सेठ खेतशी खियासी।

घनश्यामदास बिड़ला : १९१५ में घनश्यामदास बिड़ला २१ वर्ष की आयु में पहली बार गांधीजी से मिलते हैं जब उनके कलकता आगमन पर उनकी गाड़ी को अन्य लोगों के साथ मिलकर खींचते हैं। यह सम्बन्ध आजीवन रहता है। १९४० एवं १९४२ में गांधीजी बिड़ला के १८ गुरूसदय रोड कोलकाता निवास स्थान पर १२ दिन ठहरते हैं। जनवरी १९४७ में बंगाल के दंगों को शान्त करने के लिये बापू नोआखाली– मासीगपुर जाते हैं। जहाँ उनके खाने–पीने की देखभाल के लिये घनश्याम दास बिड़ला के निजी रसोईये हरिराम को भेजा जाता है।

बड़ाबाजार : २६ जनवरी १९२१ को बापू व्यापारियों की एक बड़ी सभा को बड़ाबाजार में सम्बोधित करते हैं। इतनी भीड़ होती है कि बड़ाबाजार पहुंचने के बाद भी बैठक स्थल तक पहुंचने में उन्हें करीब एक घण्टा लग जाता है। अगले दिन २६ जनवरी को मछुआ बाजार में तिलक नेशनल स्कूल का उद्घाटन करते हैं। १ जनवरी १९२९ को बड़ाबाजार के हरिसन रोड पर **शुद्ध खादी भण्डार** का उद्घाटन करते हैं। १९४७ के दंगों के दौरान गांधी बड़ाबाजार का दौरा करते हैं।

मारवाड़ी एसोसियेशन : ७ सितम्बर १९२१ को विदेशी कपड़ों के बायकाट को लेकर मारवाड़ी एसोसियेशन द्वारा केनिंग स्ट्रीट में आयोजित व्यापारियों की बैठक को बापू संबोधित करते हैं। १० सितम्बर को 'मारवाड़ी एसोसियेशन' के सदस्यों से विदेशी कपड़ों को जलाने एवं ऐसी बिक्री करने वाली दुकानों के सामने प्रदर्शन पर सदस्यों से बातचीत करते हैं। अगले दिन ही गांधीजी मारवाड़ी महिलाओं से एक अलग बैठक में विचार–विमर्श करते हैं।

माहेश्वरी भवन : महात्मा गांधी २३ दिसम्बर १९२६ को सेठ जमुनालाल बजाज के साथ कलकत्ता पधारते हैं एवं श्री रघुमल खण्डेलवाल के १५ हरीश मुखर्जी रोड स्थित निवास स्थान पर ५ दिन ठहरते हैं। अगले दिन स्वामी श्रद्धानन्द की जघन्य हत्या के विरोध में बड़ाबाजार स्थित माहेश्वरी भवन में एक सभा को सम्बोधित करते हैं जहाँ पण्डित मदन मोहन मालवीय भी उपस्थित रहते हैं।

दैनिक विश्वमित्र : १९ जुलाई १९३४ को महात्मा गांधी लाहोर से सुबह कलकत्ता पहुँचते हैं और जीवनलाल मोतीचन्द के ८, प्रिटोरिया स्ट्रीट निवास स्थान पर ठहरते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर उनसे मिलने आते हैं एवं उसी दिन हिन्दी दैनिक विश्वमित्र के कार्यालय जाते हैं।

मारवाड़ी बालिका विद्यालय : अगले दिन २० जुलाई १९३४ को 'मारवाड़ी बालिका विद्यालय' की छात्राएं गांधीजी से उनके हरिजन फण्ड में चन्दा देने के लिये मिलती हैं।

कलकत्ता कारपोरेशन के टाउन हाल में गांधीजी को मेयर नलिनी रंजन सरकार द्वारा चांदी की ट्रे से सम्मानित किया जाता है। गांधीजी द्वारा हरिजन फण्ड के लिये ट्रे की नीलामी करने पर व्यापारी एच.पी. पोद्दार ५००० रुपये में खरीदते हैं।

बसन्तलाल मुरारका : २६ फरवरी १९४० को दंगाग्रस्त नोआखाली से ढाका मेल से कलकत्ता वापस आते समय दंगों के कारण दमदम स्टेशन पर उतरना पड़ता है एवं रीजेन्ट पार्क, टालीगंज में श्री जी.डी. लायलका के निवास स्थान पर ठहरते हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए श्री बृजमोहन बिड़ला, श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, श्री बसन्तलाल मुरारका सभी उन्हें दमदम स्टेशन पर लेने पहुँचते हैं।

बंगाल के विभाजन से चिन्तित गांधीजी ९ मई १९४७ को पुन: कलकता आते हैं। विभिन्न लोगों से उनकी बातचीत होती है। इस यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात श्री सीताराम सेक्सरिया, श्री तुलसीदास सरावगी एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के पदाधिकारियों से होती है।

मारवाड़ी क्लब : स्वतंत्रत दिवस की पूर्व संध्या पर १४ अगस्त १९४७ को बापू मारवाड़ी क्लब की एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहते हैं:–

''कल हम विदेशी ब्रिटिश हुकुमत से स्वतंत्र हो जायेंगे, लेकिन आज मध्य रात्रि को हिन्दुस्तान का दो टुकड़ों में विभाजन हो रहा है। अतः कल का दिवस खुशी एवं गम दोनों का है।''◆

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वार्षिक साधारण सभा

- ◆90 संरक्षक, 58 आजीवन तथा 97 विशिष्ट सदस्य बने
- ◆समाज विकास में विज्ञापन हेतु अपील
- ◆कौस्तुभ जयंती के लिए भी सुझाव मांगे गए
- ◆सदस्यता डायरेक्टरी का प्रकाशन

वार्षिक साधारण सभा को संबोधित करते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, दायें– रा.कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, रा. महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, बायें– पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा, रा.उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा रविवार, २६ जुलाई २००९ को प्रात: ११ मर्चेण्ट चेम्बर, १५बी, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कोलकाता में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई।

श्री रुँगटाजी ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने सम्मेलन की गतिविधियों की जानकारी दी एवं सम्मेलन के संविधान में संशोधन की जरूरत पर बल देते हुए बताया कि इस हेतु पिछली कार्यकारिणी में एक समिति श्री नन्दलाल सिंहानिया की अध्यक्षता में गठित की गई है। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि यदि आपका कोई सुझाव हो तो इससे समिति को अवगत कराएं। कौस्तुभ जयंती मनाने के सम्बन्ध में आपने बताया कि इसका भार पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को दिया गया है। आपने सभी सदस्यों को यह भी जानकारी दी कि शीघ्र सम्मेलन के सभी सदस्यों की डायरेक्टरी प्रकाशित करने का प्रयास है जिसके लिए एक फार्म प्रकाशित किया जा रहा है। अध्यक्ष ने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपना सदस्यता फार्म सम्मेलन कार्यालय में जरूर भरकर भेजें। आपने पिछले दिनों सम्मेलन द्वारा अन्तर्जातीय विवाह, कुछ अनुभव विषय पर आयोजित की गई गोष्ठी की चर्चा की। आपने बताया कि झारखण्ड प्रांत का चुनाव सम्पन्न हो गया है। इस बार रांची के श्री विनय सरावगी को अध्यक्ष बनाया गया है, इसके लिए उन्होंने श्री सरावगी को बधाई भी दी। आपने अन्य सभी प्रान्तों के चुनाव भी समय पर कराने का आग्रह किया, जहां दो साल से अधिक हो गये हैं। अध्यक्ष को बताया कि जनवरी २००९ से २५ जुलाई २००९ तक ९० संरक्षक, ५८ आजीवन तथा ९७ विशिष्ट सदस्य बने हैं।

सदस्य वार्षिक सभा में अपनी बात रखते हुए

सभा में महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़ी जिसमें संक्षिप्त संशोधन हेतु श्री सुबीर पोद्दार ने ध्यान दिलाया।

श्री विश्वम्भर नेवर ने भी कुछ संशोधन हेतु ध्यान दिलाया एवं गत सभा में उठाई गई उच्च शिक्षा कोष की बात पुन: दोहराई। आपने कहा कि हमने कुछ कानूनी कार्यवाही की थी किन्तु अध्यक्ष महोदय के स्पष्टीकरण के बाद हमने समस्त कानूनी कार्यवाही वापस ले ली। अध्यक्ष ने फिर से कहा कि जो कमियां रहीं हैं, उन्हें ठीक किया जायेगा। आपने कहा कि कहीं गलती से उच्च शिक्षा कोष लिखा गया है तो उसे भी सुधारा

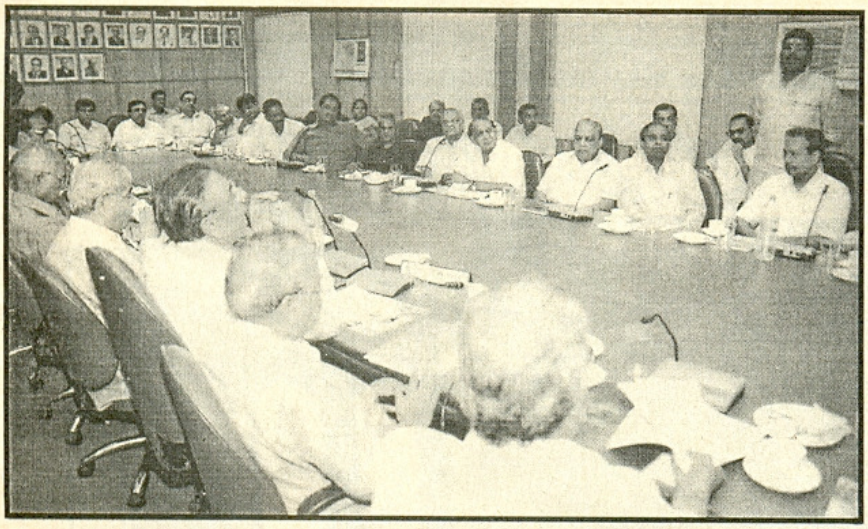

वार्षिक साधारण सभा में उपस्थित सदस्यगण

जायेगा। उपरोक्त संशोधनों के साथ रिपोर्ट को स्वीकार किया गया।

इसके अलावा महामंत्री ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कुछ सदस्यों ने इस प्रतिवेदन को दो भाग में प्रस्तुत करने पर जोर दिया। इसे सर्वसम्मत्ति से स्वीकृत किया गया।

बैठक में श्री पी.के. लिल्हा को फिर से हिसाब परीक्षक नियुक्त किया गया।

कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने वर्ष २००८–२००९ का आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसे स्वीकृत किया गया।

उपस्थित सदस्यों के विचार-

श्री गोपाल डोकानिया : मैंने गत बैठक में सोसाईटी रजिस्ट्रेशन का मुद्दा उठाया था, उसे नोट कर लिया जाना चाहिए। बैलेन्स शीट में कुछ टाईपिंग की भूल की तरफ ध्यान दिलाया तथा इसमें सुधार करने का आग्रह किया। इसके अलावा अन्तर्जातीय विवाह पर गोष्ठी के आयोजन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

श्री अरुण गुप्ता व श्री जगदीश चन्द्र एन. मूँधड़ा : सदस्य बनाने पर प्रचारकों को दिये जाने वाले कमीशन पर जानकारी चाहिए। इसकी जानकारी महामंत्री ने दी।

श्री गोपाल अग्रवाल : आम सभा की कार्रवाई समाज विकास में प्रकाशित करने का सुझाव दिया। आपने प्रचारकों को सदस्य बनाने पर दिये जाने वाले कमीशन का विरोध किया। इस पर कोषाध्यक्ष महोदय ने पुन: इसकी जानकारी दी एवं बताया कि इसे कमीशन नहीं, इन्सेन्टिव समझना चाहिए।

श्री केदारनाथ राणासरिया : समाज विकास में विज्ञापन सदस्यों के सहयोग से प्राप्त करना चाहिए। विज्ञापन प्राप्त करने हेतु कमीशन की बात नहीं होनी चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह जैसे मुद्दे पर सम्मेलन को काफी सोच–समझकर कदम बढ़ाना चाहिए।

श्री संतोष अग्रवाल व श्री बी.एल.जैन : छत्तीसगढ़ में संगठन को मजबूत करने का आश्वासन दिया।

श्री बसंत मित्तल (झारखण्ड) : झारखण्ड प्रान्त के चुनाव की जानकारी देते हुए बताया कि हमारे प्रान्त में २४ शाखाएं हैं उनके पुनर्गठन तथा सदस्यता अभियान किया जाना है। समाज के चुने हुए सभी सांसदों का सम्मेलन की ओर से अभिनन्दन करने पर जोर दिया। सदस्यता अभियान सहित अन्य कई विषय पर भी सुझाव दिये।

श्री ओम लड़िया: समाज सुधार पर जोर दिया तथा मृतक भोज का विरोध किया।

श्री शांतिलाल जैन: सामाजिक संस्थाओं का एक सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया।

श्री श्यामलाल डोकानिया: उच्च शिक्षा कोष के गठन पर जोर दिया जाना चाहिए। समाज विकास के विज्ञापन की दरें कम हों।

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल: सदस्यता अभियान, राजनैतिक चेतना तथा समाज सेवा पर सम्मेलन को जोर देना चाहिए।

श्री कृष्ण कुमार शर्मा: केन्द्रीय कार्यालय को दुरुस्त किया जाय।

श्री नन्दलाल सिंहनिया: सम्मेलन की जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे, इससे सदस्य संख्या बढ़ेगी। आपने संविधान संशोधन पर उपस्थित सदस्यों से राय भी मांगी। आपने जालान विद्यालय में सम्मेलन के साथ अगले माह एक गोष्ठी किये जाने की जानकारी दी।

श्री विश्वनाथ सिंहनिया : सम्मेलन के बारे में समाज के लोगों तक जानकारी पहुंचाने हेतु विज्ञापन दिये जाने का सुझाव दिया।

श्रीमती सरिता लोहिया : समाज के काफी बच्चों के विवाह आर्थिक कारणों से नहीं हो पाते। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया : समाज विकास में आधा पृष्ठ तथा चौथाई पृष्ठ का विज्ञापन लेने पर राय दी।

श्री रामनिवास शर्मा 'चोटिया' : समाज विकास में चौथाई पृष्ठ के विज्ञापन लिये जाने के सुझाव का समर्थन किया।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने भी सभा को सम्बोधित किया तथा हर माह सामाजिक विषयों पर गोष्ठी आयोजित करने पर बल दिया। उन्होंने कौस्तुभ जयंती के लिए भी सुझाव देने का आग्रह किया।

अध्यक्ष ने सभी उपस्थित सदस्यों से अपील की कि वे साल में कम से कम एक विज्ञापन समाज विकास में जरूर दें तथा अन्यों से दिलवाने का प्रयास करें। अध्यक्ष महोदय ने सदस्यता सूची के विषय में सदस्यों को जानकारी देते हुए कहा कि सम्मेलन के संविधान के अनुसार किसी सदस्य का सदस्यता शुल्क बकाया है तो वह तीन साल तक सदस्य बने रह सकता है उसके बाद उसकी सदस्यता स्वत: खारिज हो जाती है। आपने सभी सदस्यों से अनुरोध किया सभी विशिष्ट सदस्य अपना सदस्यता शुल्क प्रत्येक साल दें जिससे कोई बकाया न रहे।

धन्यवाद प्रस्ताव के साथ बैठक समाप्त हुई।◆

'उभरती प्रतिभाएं-गिरते मूल्य, किसको श्रेय-कौन दोषी' पर संगोष्ठी संपन्न

अपनी मौलिकता नहीं भूले नई पीढ़ी : रुँगटा

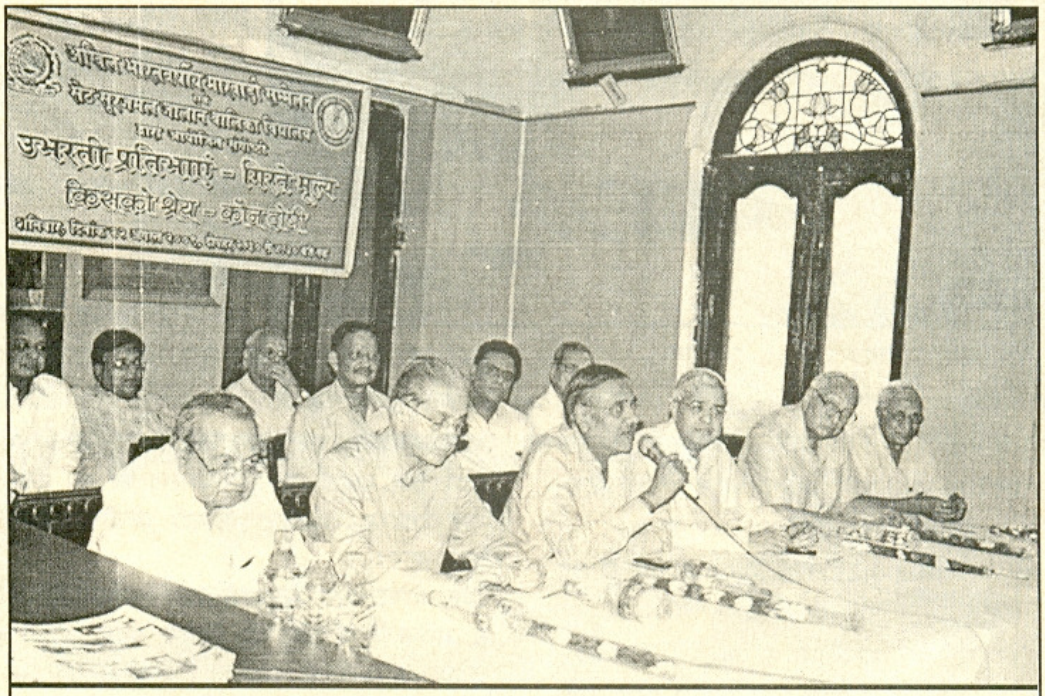

मंच पर बायें से– रा.महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री बजरंग जालान, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, सम्मेलन के पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा, जालान बालिका विद्यालय के अध्यक्ष श्री तोलाराम जालान एवं सचिव श्री नन्दलाल सिंघानिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय द्वारा १८६, चित्तरंजन ऐवन्यू, कोलकाता स्थित विद्यालय परिसर हाल में **'उभरती प्रतिभाएं–गिरते मूल्य, किसको श्रेय–कौन दोषी'** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विद्यालय की छात्राओं ने ज्वलंत समस्याओं को उठाया।

कार्यक्रम के शुभारंभ में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जागृति लाना सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को ऊँचाइयों को छूने के क्रम में अपनी मौलिकता को नहीं भूलना चाहिए। समाज के सभी वर्गों की जिम्मेदारी है कि कुरीतियों तथा रुढ़ियों के खिलाफ जागरुकता फैलायें। उन्होंने आम आदमी को इस मुहिम से जोड़ने की अपील की। विद्यालय के अध्यक्ष तोलाराम जालान, उपाध्यक्ष बजरंग जालान, सचिव नन्दलाल सिंहानिया आदि ने भी वक्तव्य रखे। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि विगत ४–५ दशकों में समाज में बड़ा परिवर्तन आया है। लड़कियां लड़कों से ज्यादा उभर कर सामने आई हैं। उन्होंने

स्कूल की शिक्षिकाएँ संगोष्ठी में भाग लेती हुई।

सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री बजरंग जालान प्रधानाध्यापिका श्रीमती इन्दरपाल कौर को सम्मानित करते हुए।

नई पीढ़ी में सोच–विचार की कमी है, वह जोश में होश खो रही है। – जूही तिवारी

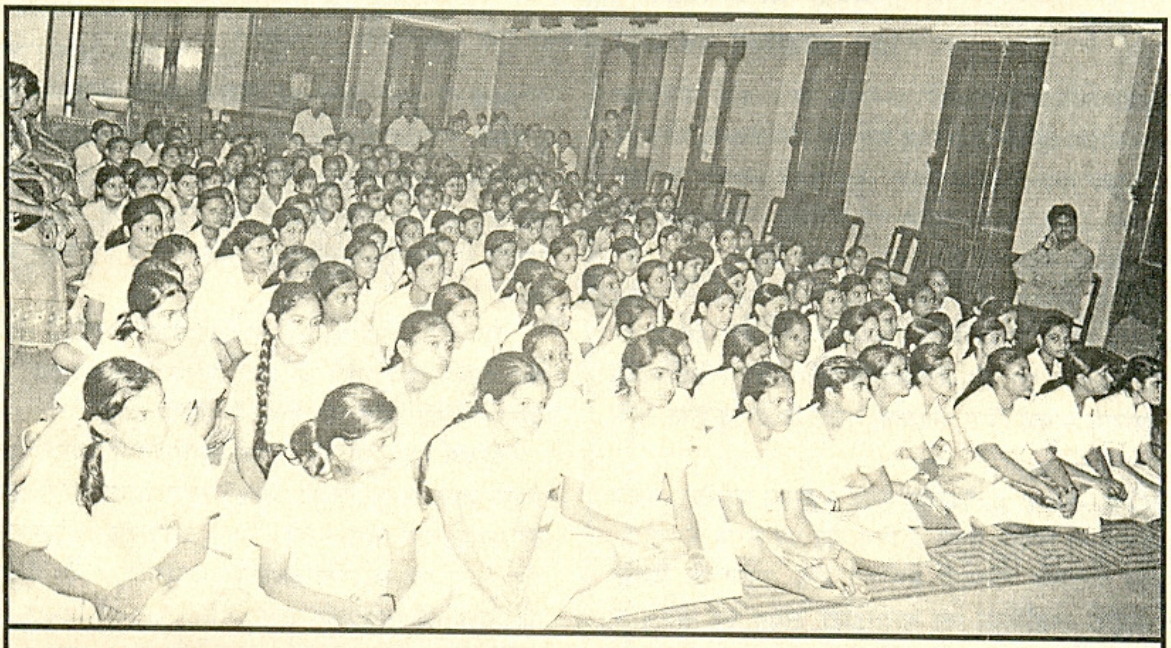

संगोष्ठी में भाग लेती स्कूल की छात्राएँ

कहा कि हमारे सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। अर्थ व धन का प्रभाव बढ़ गया है इसलिए हमारे मूल्य प्रभावित हुए हैं। संगोष्ठी के विषय पर वक्तव्य रखते हुए जूही तिवारी ने कहा कि नई पीढ़ी में सोच–विचार की कमी है, वह जोश में होश खो रही है। युवा पीढ़ी को स्वयं इस जाल से निकलना होगा। इसके अलावा युवाओं के साथ पीढ़ीगत दूरी कम होने पर ही नैतिक मूल्यों के ह्रास में कमी आयेगी। सुश्री तिवारी ने शिक्षक तथा शिक्षा पद्धति को भी इसके लिए दोषी ठहराया। छात्रा सुश्री निधि झा ने कहा कि आज सबका लक्ष्य आर्थिक रूप से संपन्न होना है, इसके लिए क्या अच्छा है, क्या बुरा, यह कोई नहीं सोचता है। शिक्षिका राजविंदर कौर ने कहा कि एकल परिवारों के कारण युवा पीढ़ी को संस्कार नहीं मिल पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा प्रणाली का व्यवसायीकरण होना भी नैतिक मूल्यों में गिरावट का एक कारण है। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि हमारे देश में धार्मिकता का प्रचार हो या सामाजिक कुरीतियों की खिलाफत या फिर आजादी की लड़ाई, सबमें युवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज भी नई पीढ़ी को ही आगे आना होगा। प्रधानाध्यापिका इंदरपाल कौर ने कहा कि हममें सामाजिक और आर्थिक कारणों से असहिष्णुता आयी है। घरों में बुजुर्गों का न होना अभिशाप हो गया है। माता–पिता के पास बच्चों को संस्कार देने के लिए समय का अभाव है। शिक्षा पद्धति में दोष है। संस्कारों के लिए कोई नंबर नहीं मिलता है सिर्फ मेधावी होना ही पैमाना बन गया है। उन्होंने कहा कि जिनको प्रतिभाओं को उभारने का श्रेय जाता है वे ही गिरते मूल्यों के लिए दोषी भी हैं।

सह संयोजक श्री बिमल कुमार चौधरी धन्यवाद देते हुए, पास में खड़े हैं सह संयोजक श्री दिलीप गोयनका, संयुक्त रा. महामंत्री श्री संजय हरलालका

इस मौके पर सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयोजक कैलाश तोदी, गोविन्द शर्मा, सह संयोजक दिलीप गोयनका, विश्वनाथ सिंहानिया, रामनिवास चोटिया, प्रेमचंद सुरोलिया, विश्वनाथ भुवालका सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे। संचालन संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका तथा धन्यवाद ज्ञापन बिमल कुमार चौधरी ने किया। राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने संगोष्ठी में प्रतिभागी शिक्षिकाओं एवं छात्राओं को सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।◆

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ

◆प्रतिभा सम्मान समारोह ◆संतोष टेकरीवाल की हत्या के विरोध में जुलूस
◆विवाह योग्य लड़के–लड़कियों का बायोडाटा संग्रह
◆153 शाखाओं का दौरा करना एवं सदस्यता अभियान

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २६वाँ प्रादेशिक अधिवेशन सफलतापूर्वक दिनांक २१ एवं २२ मार्च २००९ को पटना में सम्पन्न हुआ तथा श्री कमल नोपानी ने प्रादेशिक अध्यक्ष पद ग्रहण किया। उक्त अधिवेशन में राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों के अतिरिक्त काफी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रादेशिक अध्यक्ष श्री नोपानी जी ने सम्मेलन के अन्य पदाधिकारियों का मनोनयन किया। अधिवेशन के बाद नई जागृति आयी है तथा कार्य द्रुत गति से सम्पादित हो रहा है। सभी शाखाओं से दूरभाष द्वारा सम्पर्क किया गया तथा चुनाव कराने हेतु प्रेरित किया गया।

अप्रैल २००९ : लोकसभा चुनाव में समाज एवं वैश्य समाज के प्रत्याशियों को विजयी बनाने के लिए दौरा एवं बैठकें की गई।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा समाज के **विवाह योग्य लड़के–लड़कियों का बायोडाटा संग्रह** एवं नौकरी के लिए इच्छुक व्यक्तियों का बायोडाटा संग्रह करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इससे सम्मेलन एवं शाखाओं के लिए दूरियाँ कम होगी और अपने समाज के सभी लोगों को लाभ मिलेगा।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन **मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने एवं पहचान–पत्र बनवाने** हेतु पहल करने जा रही है। समाज बन्धुओं एवं शाखाओं से अनुरोध किया गया है कि जिन व्यक्तियों का नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है वे बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के न्यू डाक बंगला रोड स्थित कार्यालय में उपलब्ध फार्म भरकर जमा करायें। उनका नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने तथा पहचान–पत्र के लिए फोटोग्राफी हेतु उन्हें जानकारी दी जायेगी।

मई २००९ : दिनांक २४ मई २००९ को स्थायी समिति एवं प्रमंडलीय उपाध्यक्ष, मंत्रियों की बैठक आहूत की गई।

जून २००९ : अनुसूची–२ में शामिल करने हेतु बिहार राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग–पत्र मारवाड़ी अग्रवाल जाति के लोग बिहार राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग से अनुरोध किया गया कि ओ.बी. सी. (अनुसूची–२) में शामिल किया जाये। इसके लिए मारवाड़/अग्रवाल की जनसंख्या नियमानुसार पूरी करता है। समाज की जनसंख्या पटना में लगभग दो लाख, मुजफ्फरपुर में एक लाख तथा भागलपुर में डेढ़ लाख है।

संतोष टेकरीवाल की हत्या का विरोध एवं जुलूस का आयोजन आजाद ट्रांसपोर्ट के मालिक संतोष टेकरीवाल का दिनांक १२ जून २००९ की रात्रि में निर्मम हत्या का समाचार मिलते ही अध्यक्ष श्री कमल नोपानी एवं कई पदाधिकारी रात्रि देर तक अस्पताल में रहे। १३ जून को अपराह्न २.०० बजे सम्मेलन सभाकक्ष में शोक सभा हुई, जिसमें शहर के काफी लोगों ने उपस्थित होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रादेशिक अध्यक्ष एवं अनेक पदाधिकारी उनके निवास स्थान पर गये तथा उनके परिजनों को सांत्वना दी तथा शव–यात्रा में भाग लिया तथा समाचार पत्रों के माध्यम से हत्यारों को अविलम्ब गिरफ्तार करने हेतु प्रशासन से मांग की।

दिनांक २१ जून २००९ को टेकरीवाल के हत्यारों को पकड़ने एवं शांति बनाये रखने के लिए जुलूस निकाला गया जो डाक बंगला चौराहा पहुँच कर सभा में परिणत हुआ।

दिनांक २१ जून २००९ को कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक पटना में हुई जिसमें अनेक निर्णय लिये गये जिसमें शिक्षा को बढ़ावा देना, संगठन को मजबूत बनाने हेतु १५३शाखाओं का दौरा करना एवं सदस्यता अभियान चलाना मुख्य है। कार्यकारिणी की बैठक की कार्यवाही संलग्न है।

प्रतिभा सम्मान समारोह : दिनांक २८ जून २००९ को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स, पटना के सभागार में अपराह्न २.०० बजे से प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सी.बी.एस.ई., आई.सी.एस.ई. एवं बिहार बोर्ड की १०वीं एवं १२वीं कक्षा में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले समाज के छात्र–छात्राओं को शिक्षा गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

आकांक्षा, स्नेहा बागला, सुरभी माहेश्वरी, निकिता हरलालका,ऋचा चोखानी, सलाखा अग्रवाल, प्रज्ञा मित्तल, रोहित बंसल, रोशनी अग्रवाल, मनीष बंसल, प्रियंका अग्रवाल, रोहित कुमार, स्वेता अमृतम, श्रेया पोद्दार, अन्नु अग्रवाल, कुणाल शर्मा, शीतल गुप्ता, सुरभी अग्रवाल, तन्वी मित्तल, अक्षय अमृतांशु, जागृति अग्रवाल, अनुराग झुनझुनवाला, सुमित जालान, उदित अग्रवाल, हर्ष अग्रवाल, हर्षल अग्रवाल, रेषव अग्रवाल–१२वीं कक्षा एवं मल्लिका गुप्ता, तुलिका पोद्दार, प्रणय सर्राफ, दीक्षा ड्रोलिया, सिमरण सुल्तानिया, वंदना बागला, अंकित खण्डेलिया, गंगेश राज, रोहित ड्रोलिया, अंकित अग्रवाल, कृष्णा पोद्दार, रोनक अग्रवाल, मेघा अग्रवाल, साक्षी झुनझुनवाला, प्रणव अग्रवाल, साहिल अग्रवाल, दीपाक्षी अग्रवाल, नम्रता मस्करा, कौस्तुभ बूबना, पलक बंसल, अर्चित गोयल, मुकुन्द अग्रवाल, केशव नाथानी, मनीष कुमार, देविका अग्रवाल, विशाल गोयनका, स्नेहा बेरिया, कविश केजड़ीवाल, रोहिणी सर्राफ, हर्ष बेरिया, तूलिका अग्रवाल, राजेश कुमार अग्रवाल, निधी बोहरा, हर्ष विदासरिया, अंकित बोथरा, सृष्टि अरुण, हर्ष छापड़िया, चांदनी सिंघल, कृति जालान, हिमशिखा अग्रवाल, तन्वी अग्रवाल, पवन अग्रवाल, शुभम संघई, सुरेन्द्र संघई, सुमीत

अग्रवाल, कंचन मोदी, अमन केडिया, रजत गुप्ता–१०वीं कक्षा।

बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री नन्दकिशोर यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया तथा सभी छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया।

अध्यक्ष कमल नोपानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज के बच्चों ने १०वीं एवं १२वींकक्षा की परीक्षा में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर अपने माता–पिता के साथ, समाज के साथ, बिहार का नाम गौरवान्वित किया है। उन्होंने सभी बच्चों को बधाई दी।

श्री नन्दकिशोर यादव ने अपने उद्घाटन भाषण में बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि बिहार के बच्चों में शिक्षा की प्रवृतियाँ बढ़ी हैं तथा बिहार में ही नहीं अपितु बिहार से बाहर भी विशिष्ट स्थान प्राप्त कर बिहार का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं।

महामंत्री श्री राजेश सिकारिया के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ। तत्पश्चात् अल्पाहार की व्यवस्था की गई।

पटना प्रमंडल के अतिरिक्त भागलपुर प्रमंडल नाथनगर शाखा के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार डॉ. सतीश चन्द झा मुख्य अतिथि एवं श्री राजीव गुप्ता, महाप्रबंधक बी.एस.एन. विशिष्ट अतिथि थे। समारोह में ६२ बच्चों को सम्मानित किया गया।

स्वागत समारोह : अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा के पटना आगमन पर दिनांक २७ जून २००९ को कार्यालय में उनका स्वागत किया गया।

शाखा चुनाव : दिनांक २८ जून २००९ को प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, प्रमंडलीय उपाध्यक्ष श्री गिरधारी लाल सर्राफ एवं महामंत्री श्री राजेश सिकारिया द्वारा पटना सिटी शाखा का दौरा किया गया तथा शाखा का चुनाव कराया गया। श्री सुभाष अग्रवाल–शाखाध्यक्ष एवं श्री मनोज झुनझुनवाला–शाखा मंत्री सर्वसम्मति से चुने गए।

दिनांक २१ जून २००९ को सम्पन्न कार्यकारिणी बैठक में पारित प्रस्ताव

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की आज की बैठक सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करती है कि राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा निर्धारित संरक्षक सदस्य शुल्क के अनुरूप वे सदस्य बनाये। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क ११००/– रुपये एवं वंशानुगत सदस्यता शुल्क ५१००/– रुपये ही रखा जाये। ३१ मार्च ०९ तक बने सभी सदस्यों से संबंधित किसी भी प्रकार की राशि का बँटवारा नहीं होगा तथा वे राष्ट्रीय, प्रान्त एवं शाखा के सदस्य होंगे। नये बने सदस्य से प्राप्त सदस्यता शुल्क का बँटवारा निम्न रूप से किया जाए–

१० प्रतिशत राष्ट्रीय कार्यालय, २० प्रतिशत शाखा, ३५ प्रतिशत प्रादेशिक कार्यालय, ३५ प्रतिशत स्थायी कोष के बीच बँटवारा होगा। वे तीनों जगह के सदस्य होंगे तथा उनका शाखा, प्रान्त एवं राष्ट्र स्तर पर समान अधिकार होगा।◆

लघुकथा:

स्वामी विवेकानंद

यह उन दिनों की बात है, जब स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। वहां कई महत्वपूर्ण जगहों पर उन्होंने व्याख्यान दिए। उनके व्याख्यानों का वहां जबर्दस्त असर हुआ। लोग स्वामी जी को सुनने और उनसे धर्म के विषय में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक हो उठे। उनके धर्म संबंधी विचारों से प्रभावित होकर एक दिन एक अमेरिकी प्रोफेसर उनके पास पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी को प्रणाम कर कहा, 'स्वामी जी, आप मुझे अपने हिंदू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें।'

इस पर स्वामी जी बोले, 'मैं यहां धर्म प्रचार के लिए आया हूं न कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमेरिकी धर्म–प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूं कि वे धर्म परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करें। यही धर्म की सार्थकता है। यही सभी धर्मों का मकसद भी है। हिंदू संस्कृति विश्व बंधुत्व का संदेश देती है, मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानती है।' वह प्रोफेसर उनकी बातों से अभिभूत हो गए और बोले, 'स्वामी जी, कृपया इस बारे में और विस्तार से कहिए।'

प्रोफेसर की यह बात सुनकर स्वामी जी ने कहा, 'महाशय, इस पृथ्वी पर सबसे पहले मानव का आगमन हुआ था। उस समय कहीं कोई धर्म, जाति या भाषा न थी। मानव ने अपनी सुविधानुसार अपनी–अपनी भाषाओं, धर्म तथा जाति का निर्माण किया और अपने मुख्य उद्देश्य से भटक गया। यही कारण है कि समाज में तरह–तरह की विसंगतियां आ गई हैं। लोग आपस में विभाजित नजर आते हैं। इसलिए मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूं कि तुम अपना धर्म पालन करते हुए अच्छे ईसाई बनो। हर धर्म का सार मानवता के गुणों को विकसित करने में है इसलिए तुम भारत के ऋषियों–मुनियों के शाश्वत संदेशों का लाभ उठाओ और उन्हें अपने जीवन में उतारो।' वह प्रोफेसर मंत्रमुग्ध यह सब सुन रहे थे। स्वामी जी के प्रति उनकी आस्था और बढ़ गई।◆

धर्म-निरपेक्षिता (सेकुलरिज्म) लील रही है हमारी तेजस्विता एवं अस्मिता को

- जुगलकिशोर जैथलिया

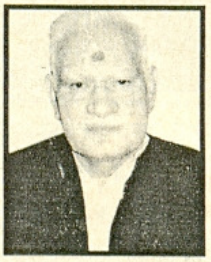

धार्मिक होना भारत में सदा से सद्‌गुण माना जाता है पर आज स्वाधीन भारत में धार्मिक होना 'साम्प्रदायिक' और धर्म–निरपेक्ष (Secular) होना 'सद्‌गुणों' के रूप में प्रतिष्ठा पा रहा है। यदि सन्त कबीर आज होते तो वे इस ''रंगी को नारंगी'' कहने पर अवश्य रोते। इसमें भी खेल बराबर का नहीं है कुछ सोचे–विचारे अपवाद हैं। धार्मिक होने पर भी यदि आप इस्लाम या ईसाई मत के विश्वासी हैं तो कोई चिन्ता की बात नहीं है क्योंकि तब आप अल्पसंख्यक के रूप में भारत के संविधान में प्रदत्त विशेषाधिकारों से सुरक्षित हैं, अपनी मरजी से अपने काम चलाने में। इन अधिकारों के चलते आपको साम्प्रदायिक कहने का साहस भला किसमें है? आपका साथ ही तो किसी दल या संगठन को साम्प्रदायिक से राष्ट्रीय बनाने की महौषधि है। कोई भी दल या संस्था अपने नियमों या विश्वास से नहीं, आपका साथ होने से ही 'राष्ट्रीय' बनती है। आप केवल 'पारस पत्थर' ही नहीं, जिसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है बल्कि आप तो वह 'अनामी पत्थर' हैं, जिसके स्पर्श के बिना सोना भी सोना नहीं कहला सकता।

भारत ने स्वाधीनता का दीर्घकालीन संघर्ष केवल भौगोलिक आजादी के लिए ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक एवं धार्मिक आजादी के लिये भी किया था। 'स्वराज्य' एवं 'स्वधर्म' दोनों ही हमारे संघर्ष के मुद्दे थे। बहुत बार तो 'स्वधर्म' का मुद्दा 'स्वराज्य' से भी बढ़कर माना जाता था। हिन्दुओं ने इस्लामी अत्याचार से ऊबकर एंक काल में भ्रमवश अंग्रेजों से सहानुभूति रखी तो बाद में ''अंग्रेज हमें धर्मभ्रष्ट कर रहा है'', इसी को आधार बनाकर १८५७ ई. में हिन्दू और मुसलमान दोनों एकजुट होकर अंग्रेजों से लड़े, यह इतिहास है।

अंग्रेजों ने तब ***''फूट डालो और राज करो''*** की नीति अपनाते हुए हिन्दुओं को अपने धर्म से विरत करने एवं धर्म–गौरव–शून्य बनाने के नानाविध उपाय अपनाये। १८५७ की एकता को तोड़ने हेतु अलगाववादी मुस्लिम नेतृत्व एवं आत्महन्ता हिन्दू नेतृत्व को पूरा सहारा देकर आगे बढ़ाने के काम अंग्रेजों ने उसी दीर्घकालीन योजना के अंग के रूप में किए। स्वामी विवेकानन्द को १८९३ ई. के शिकागो धर्म सम्मेलन में मिली अप्रत्याशित उपलब्धि से भारत की अंग्रेजी सरकार को अवश्य झटका लगा क्योंकि अंग्रेज सरकार द्वारा आख्यायित 'जाहिल हिन्दूधर्म' को 'विश्व का श्रेष्ठतम धर्म' कहलाने का गौरव मिल चुका था एवं गोरी चमड़ी के कई नामी–गिरामी लोग वेदान्त के प्रचार में सहयोगी बन गए थे। कुछ तो विवेकानन्द के शिष्य बनकर भारत भी आ गए थे। पर भारत के दुर्भाग्य से ***''गर्व से कहो हम हिन्दू हैं''*** की घोषणा करने वाले योद्धा सन्यासी स्वामी विवेकानन्द ने चालीस वर्ष की उम्र भी नहीं पाई और वे १९०२ में इहलोक छोड़ गए। तिलक भी पहले जेल के सीखचों में ढकेल दिए गए, छूटे तो ज्यादा दिन जीवित नहीं रहे। तब फिर से कांग्रेसी नेतृत्व 'मुस्लिम तुष्टीकरण' हेतु दण्डवत करता पाया गया और अन्ततः 'असंभव–असंभव' कहते–कहते भी मातृभूमि का विभाजन 'हिन्दू और मुस्लिम' जनसंख्या के अनुपात पर स्वीकार कर लिया गया पर मुसलमानों को पाकिस्तान जाने से रोका गया यानि हिन्दुस्तान में ही रहने दिया गया और हिन्दुओं को पाकिस्तान में मरने को छोड़ दिया गया, यह इतिहास सबको विदित है।

आजादी के बाद हम यदि अपनी परम्परा पर गर्व कर अपनी संस्कृति को शासन में स्थान देते तो एशिया के बहुत देशों को बौद्ध–धर्म एवं रामायण के आधार पर जोड़ सकते थे, सोहार्द बढ़ा सकते थे, पर मुस्लिम तुष्टीकरण के चक्कर में हमने देश–विभाजन के बावजूद अल्पसंख्यकों के लिए विशेषाधिकार संविधान की धारा २९ एवं ३० में स्वीकारे, यह विश्व का आठवाँ आश्चर्य था। यही नहीं वोट्ट बैंक के चलते हमने प्रचुर घुसपैठ भी होने दी। आज आतंकवाद एवं युद्ध की छाया हमारे ऊपर मंडरा रही है, पर हम अमावस्या को अमावस्या न कहने को मजबूर हैं। ऐसे में समय का तकाजा है कि भारत की जनता सही स्थिति का गहराई से विचार करे और राजनैतिक नेताओं को कड़े एवं यथार्थ कदम उठाने पर मजबूर करे।

ईसाई मिशनरियां जो आजादी के तुरन्त बाद अपने बोरिया–बिस्तर बांधकर जाने वाली थी, इसी सेक्यूलरवादी नेताओं के भरोसे पर फिर से जमकर बैठ गई। आज पूरा पूर्वांचल इनके धर्मान्तरण की करतूतों से अशान्त है, पर उन्हें भी अल्पसंख्यक के नाते देश में भरपूर सुविधा है हिन्दुओं को मतान्तरित कर अलगाववादी के रूप में खड़ा करने की। आश्चर्य की बात यह है कि अल्पसंख्यक कौन है, इसकी परिभाषा तक नहीं दी गई। आज देश में धीरे–धीरे अल्पसंख्यक ही बहु संख्यक बनते जा रहे हैं।

आजादी के बाद अल्पसंख्यकता की बात मुसलमानों और ईसाइयों तक ही नहीं रही, क्रमशः बौद्ध, सिक्ख और जैन भी इसमें संवैधानिक लाभों के चलते जुड़ गए। अब तो अगड़े, पिछड़े, जाति, क्षेत्र के और अनेक भेद खड़े हो रहे हैं, जिन्हें हवा दी जा रही है हमारे राजनेताओं द्वारा अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए।

अतः आज का समय गहराई से चिन्तन कर विशेषाधिकार समाप्त करने का है। यह बात ध्यान रखने की है कि भारत अपने संविधान के कारण एक नहीं है, यह तो अपनी हिन्दू संस्कृति, धर्म एवं परम्परा के कारण एक है, खान–पान, भाषा एवं उपासना पद्धतियों की भिन्नता के बावजूद। अतः अपने राष्ट्र की अखंडता को बरकरार रखने तथा पड़ोसी देशों से मित्रता बढ़ाने का एक ही सूत्र है – हमारी संस्कृति एवं धर्म। हम इसकी रक्षा करेंगे तो यह हमारी रक्षा करेगा। इसी में से भारत के परम–वैभव की भवितव्यता भी पूरी होगी।◆

– 161/1, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता – 7
मो. – 9830341747

तिरंगे का दर्द

-जय कुमार रुसवा

अनेकों नजारे, पड़ाव
मोड़–घुमाव
रास्ते डगर
लाया है तिरंगे के सामने
आजादी का लम्बा सफर
इस सफर में तिरंगा
कई बार खुशी से
नाचने को उद्यत हुआ है
तो कभी ऐसे पल भी आए हैं
जब ये आहत हुआ है
मर्माहत हुआ है
कभी यह सीना तान कर
चुनौतियों से लड़ा है
तो कभी कहीं कर्णधारों की करनी पर
शर्म से गड़ा है
इस देश की राजनीति
जब उल्टी धारा में बही
इसमें घोटाले और
सत्ता लोलुपता की
प्रवृत्ति बढ़ती रही
इससे जुड़ गए जब
दो और कसकते अवसाद
भ्रष्टाचार और आतंकवाद
तो तिरंगे के मन में
पैदा होने लगी घुटन
वह रहने लगा हर क्षण
हताश, उदास, मुरझाया–मुरझाया
तो भारतमाता ने
उसके सर को सहलाया
और पूछा–
क्यूं इतनी गहरी
उदासी में डूबे हो
तुमको देखकर लगता है
अपने आप से ऊबे हो
इस तरह गुमसुम रह कर
अपनी पीड़ा और न बढ़ाओ
मन हल्का हो जाएगा
अपना दर्द मुझको बताओ
सुन कर तिरंगे के
नयन छलछला गए
हिचकियों के साथ
दर्द के गुब्बार होठों पर आ गए
वह बोला–हे मेरी भारतमाता!
जब गांधी, नेहरू, पटेल, सुभाष
और शास्त्री जैसे
नेताओं के हाथों का स्पर्श पाता था

जब आजाद, भगत, बिस्मिल
और अशफाक जैसा कोई क्रान्तिकारी
मुझे सीने से लगाता था
और शीश उठाकर
वंदेमातरम गाता था
तो मैं भी खुशी से
फूला नहीं समाता था
मेरा भी अंग और
हर रंग खिल जाता था
मैं गर्व से लहराता था
और लहराने से पहले
उन पर फूल बरसाता था
मगर अब की स्थिति
बिल्कुल बदली हुई पाता हूं
अबके ये छुटभैये नेता
मुझे नीचे से खींचते हैं
और मैं ऊपर से खुल जाता हूँ
फिर भी राष्ट्र के
सम्मान में लहराकर
मैं अपना फर्ज पूरा करता हूँ
मगर एक सच यह भी है
कि भीतर ही भीतर
बहुत डरता हूँ
पता नहीं कब तक
इस तरह उघाड़ा जाऊँगा
क्या पता कब तक
कश्मीर के लाल चौक पर
जलाया जाऊँगा, फाड़ा जाऊँगा
न मालूम कब तक
मुझे हाथों में लेकर
ये नेता कुर्सी की हवस में लड़े
और क्या पता कब
किसी भ्रष्ट नेता के लिए
मुझको झुकना पड़े
कब तक इन नेताओं की टेबलों पर
खिलौने की तरह पड़ा रहूंगा
और क्या पता कब तक
सीमाओं का संकेत बन कर
मौन खड़ा रहूंगा
कब तक देखता रहूंगा
कुर्सी और वोटों की
यह लूट–खसौट
कब तक झेलता रहूँगा
श्रृंखलाबद्ध आतंकी विस्फोट
कब तक ढोता रहूंगा
मैं लाशों के अम्बार
कब तक सुनता रहूंगा
हृदयभेदी चीत्कार
कब तक दल और
पार्टियों की ये खींचातान
करती रहेगी मेरी आत्मा को
घायल और लहू–लुहान
विधायकों की खरीद–फरोख्त कर
जब कोई मंत्रीपद की शपथ लेता है
तो सचमुच मेरा
धीरज जवाब दे देता है
फिर भी ऐ मेरी भारतमाता!
इतना कुछ बर्दाश्त करने की शक्ति
मैं तब पाता हूँ
जब किसी रण बांकुरे सिपाही के
शव पर ओढ़ाया जाता हूँ
उस वक्त मेरा तार–तार
रंगदे बसन्ती चोला
गुनगुनाता है
मुझको मेरे होने का
अर्थ मिल जाता है
मुझे भी लगता है
कि मैं भी उस वीरगति पाने वाले
जवान सा जवान हूँ
इस भारत की पहचान हूँ
भारती की शान हूँ
इसलिए हे मेरे देशवासियों
अपनी पिछली भूलों को
और मत दोहराना
मुझे चाहे जितनी बार
शहीदों के शव पर
कफन की तरह सजाना
मगर किसी भ्रष्ट नेता के
पापों को ढ़कने की
चादर मत बनाना।

पता: 66, पाथुरियाघाट स्ट्रीट,
कोलकाता–700 006
मोबाईल – 9433272705

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या – ०८९
नाम : श्री मनीष डोकानिया
पत्नी का नाम : श्रीमती श्रुती डोकानिया
पिता का नाम : श्री लोकनाथ डोकानिया
कार्यालय का पता :
१२, मैंगो लेन, प्रथम तल्ला
कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : (०३३) ३०२२५६६८
फैक्स : (०३३) २२१०३५६९
मोबाईल : ०९३३१०१३२२८
ई–मेल : dokania3@yahoo.com
निवास का पता :
डोकानिया भवन
बी.जे.–२३३, सेक्टर–२
साल्ट लेक, कोलकाता–७०० ०९१

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९०
नाम : ऑटो डिस्ट्रीब्यूटर्स लि.
प्रतिनिधि : श्री सुबीर पोद्दार
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
३६, चौरंगी रोड, कोलकाता – ७०० ०७१
दूरभाष : (०३३) २२८८ २४२१/२/३
फैक्स : (०३३) २२८८ २४२०
मोबाईल : ०९८३००६३५८६
ई–मेल : poddarpratishthan@rediffmail.com
निवास का पता :
२, अशोका रोड, अलीपुर
कोलकाता – ७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९१
नाम : सुधा जगदीश मूंदरा चैरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री जगदीश चन्द्र एन. मूंधड़ा
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
७डी, लैंसडाउन हाईट्स
६, शरत बोस रोड, कोलकाता– ७०० ०२०
दूरभाष : (०३३) २४७६५७३१
मोबाईल : ०९८३००४७५२१
निवास का पता :
७डी, लैंसडाउन हाईट्स
६, शरत बोस रोड, कोलकाता– ७०० ०२०

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९२
नाम : अभिषेक स्टील इण्डस्ट्रीज लि.
प्रतिनिधि : श्री रामानन्द अग्रवाल
कार्यालय का पता :
५३५–सी, उर्ला इण्डस्ट्रीएल एरिया
उर्ला, रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : (०७७१) २३२३४०१
फैक्स : (०७७१) २३२४४०२
मोबाईल : ०९९८१९४१०००
ई–मेल : asilraipur@sity.com
निवास का पता :
ए–११/५, सेक्टर–३
डदया सोसाइटी, टाटीबांध
रायपुर, छत्तीसगढ़

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९३
नाम : मोतीजुग चैरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री जे.के. सराफ
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
मोतीजुग हाउस
१, ऑकलैंड प्लेस, कोलकाता – ७०० ०१७
दूरभाष : (०३३) २२८३१७४८/४९/५०
फैक्स : (०३३) २२८००६७०
मोबाईल : ०९८३००६३४७३
ई–मेल : uralindia@vsnl.net
machineintl@vsnl.net
निवास का पता :
३, आइरन साइड रोड, कोलकाता–७०० ०१९

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९४
नाम : बीआरजी आइरन एण्ड स्टील कं. प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री अंजनी कुमार गोयल
कार्यालय का पता :
''डकबक हाउस''
४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता – ७०० ०१७
दूरभाष : (०३३) २२८९३१९२/९३/९४
फैक्स : (०३३) २२८९३१९५

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९५
नाम : जगरनाथ ट्रांसपोर्ट
प्रतिनिधि : श्री महाबीर अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
वरसुआ, जिला सुन्दरगढ़, उड़ीसा
दूरभाष : (०६६२५) २३७०९४
फैक्स : (०६६२५) २३७०९४
मोबाईल : ०९४३७०४८२१८
निवास का पता :
एन४१५, सिविल टाउन
राउरकेला, उड़ीसा

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९६
नाम : पाटनी फिनान्सियल सर्विसेज प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री अखिलेश कुमार जैन
कार्यालय का पता :
२२६/१, ए.जे.सी. बोस रोड
त्रिनिटी, यूनिट–३सी, कोलकाता–७०० ०२०
दूरभाष : (०३३) २२८९११७६/७८
फैक्स : (०३३) २२८९१४८३
मोबाईल : ०९८३१०२०७४८
ई–मेल : akhilesh.patni@gmail.com
निवास का पता :
२२७/१ए, ए.जे.सी. बोस रोड, फ्लैट नं.–७बी
गार्डेन्जा होम्स, कोलकाता–७०० ०२०

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

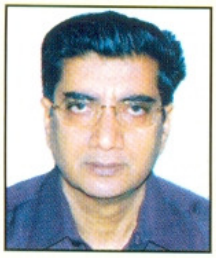

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९७
नाम : महेन्द्र स्टील ट्रेडर्स
प्रतिनिधि : श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल
कार्यालय का पता :
८सी, महर्षि देवेन्द्र रोड
कोलकाता – ७०० ००७
दूरभाष : (०३३) २२७४९६५५
मोबाईल : ०९८३०१४९८८६
निवास का पता :
एफई–२०५, साल्ट लेक, सेक्टर–३
कोलकाता – ७०० ०९१

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९८
नाम : आरएनए. कैपिटल मार्केट्स लि.
प्रतिनिधि : श्री निरंजन कुमार अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
जी–५०१, सिटी सेन्टर, साल्ट लेक
ब्लाक 'डीसी', कोलकाता–७०० ०६४
दूरभाष : (०३३) ४००६३००७
फैक्स : (०३३) ४००६३०१७
मोबाईल : ०९८३१०४७७००
ई–मेल : nk@nkgroup.in
निवास का पता :
पी–३३७, लेक टाउन, ब्लॉक–ए
कोलकाता–७०० ०८९

संरक्षक सदस्य संख्या – ०९९
नाम : सुपर सोनिक कैरियर प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री सुभाष कुमार अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
पी–९, न्यू सी.आई.टी. रोड, तीसरा तल्ला
कोलकाता–७०० ०७३
दूरभाष : (०३३) २२३७५२९८/२२३६०५८४
फैक्स : (०३३) २२३७८९०१
मोबाईल : ०९४३११८६०००
ई–मेल : supersoniccarrier@gmail.com
निवास का पता :
६०७, 'ओ' ब्लॉक, न्यू अलीपुर
कोलकाता–७०० ०५३

संरक्षक सदस्य संख्या – १००
नाम : श्री बालाजी टेक्सपिन प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री विजय गुजरवासिया (अग्रवाल)
कार्यालय का पता :
७, गणेश चन्द्र एवेन्यू, तीसरा तल्ला
कोलकाता–७०० ०१३
दूरभाष : (०३३) २२११०१०४
फैक्स : (०३३) २२११०४३७
मोबाईल : ०९३३१०१५००१/९८३००२१५६५
ई–मेल : balaji_bijay@yahoo.co.in
निवास का पता :
१४/२, बर्दवान रोड
''सिद्धार्थ'' छठां तल्ला
६बी–अलीपुर, कोलकाता–७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – १०१
नाम : मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन
प्रतिनिधि : श्री मामराज अग्रवाल
कार्यालय का पता :
पी–१०, न्यू हावड़ा ब्रिज एप्रोच रोड
अमर भवन, प्रथम तल, कोलकाता–७०० ००१
दूरभाष : (०३३) २२३५२४८५/३६७१
फैक्स : (०३३) २२१५९६९६
मोबाईल : ०९८३००५७३९७
ई–मेल : mamrajagarwala@rediffmail.com

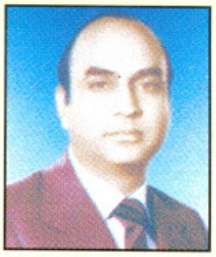

संरक्षक सदस्य संख्या – १०२
नाम : ओरिएन्ट स्टील एण्ड इन्डस्ट्रीज लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री नवल किशोर राजगड़िया
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
२, ब्रबर्न रोड, कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : (०३३) ४००७०९४३
फैक्स : (०३३) २२२५३८१३
मोबाईल : ०९८३१००८८५१
ई–मेल : nawal@orientsteel.com
निवास का पता :
८/१सी, लोअर राउडन स्ट्रीट,
कोलकाता–७०० ०२०

संरक्षक सदस्य संख्या – १०३
नाम : बी.डी. कास्टींग लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री रमेश चन्द गोयल
कार्यालय का पता :
४, फेयरली प्लेस, पाँचवा तल्ला
कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : (०३३) ४००५९०००
फैक्स : (०३३) ४००५९०९१
मोबाईल :
ई–मेल : info@bdcastings.com
निवास का पता :
५, कैमक स्ट्रीट, सरस्वती निकेत
बी–६, कोलकाता–७०००१७

संरक्षक सदस्य संख्या – १०४
नाम : बोथरा सीपिंग सर्विसेज
प्रतिनिधि : श्री अजित चन्द बोथरा
कार्यालय का पता :
२८–२–४७, दासपल्ला सेन्टर, सूर्याबाग
प्रथम तल, विशाखापटनम–५३००२०
दूरभाष : (०८९१) २५६९२०८/२५२५६९२
फैक्स : (०८९१) २५६९३२६
मोबाईल : ०९८४८५४८१६०
ई–मेल : ajit@bothragroup.com
निवास का पता :
१०–१–४०, ट्रेभलरी बंगला रोड
विशाखापटनम – ५३०००३

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Over-night travel bag worth Rs. 360/-
OR
Books with every 1 year subscription

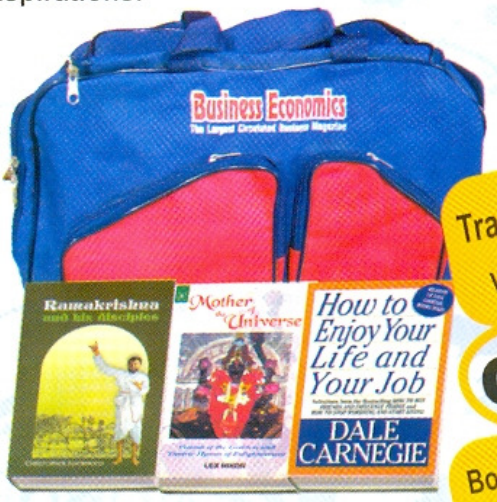

Travel bag + Books worth Rs. 1080/-

OR

Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

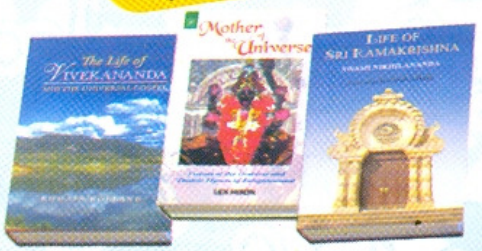

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books **OR** ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag **OR** ☐ Books

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated : _____ for Rs. _____ drawn on : _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature : _____ date : _____

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री सजन कुमार बंसल**
कार्यालय का पता :
३ए, लाउडन स्ट्रीट
कोलकाता – ७०० ०१७
मोबाईल नं.–०९८३०००६७६६
ई–मेल – cmd@bansalgroup.co.in

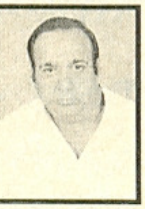

नाम : **श्री अंजनी कुमार अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– ज्योति मिल्स कम्पाउण्ड
जैयपोर, कोरापुट–७६४००५ (उड़ीसा)
मोबाईल नं.–०९९३७६६६६४८

नाम : **श्री राम अवतार गुप्ता**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– हिन्दुस्तान ऑटोमोटिव
गांधी चौक, जैपोर–७६४००१ (उड़ीसा)
मोबाईल नं.–०९४३७०३१४४७

नाम : **श्री ओम प्रकाश हलान**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– प्रकाश एण्ड कं.
गांधी चौक, जैपोर–७६४००१ (उड़ीसा)
मोबाईल नं.–०९४३७०१४७१५

नाम : **श्री बिमल कुमार चौधरी**
कार्यालय का पता :
१४/सी, एम.डी. रोड, तीसरा तल्ला
कोलकाता – ७०० ००७
मोबाईल नं.–०९८३००३३१२१

नाम : **श्री विकास अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– रूपा एण्ड कम्पनी लिमिटेड
१, हो चि मिन्ह सारणी, ८वां तल्ला
मेट्रो प्लाजा, कोलकाता – ७०० ०७१
फोन नं.–०३३–३०५७२१००
ई–मेल – kunjbihari@rupa.co.in

नाम : **श्री सुभाष चन्द्र पोद्दार**
कार्यालय का पता :
३, सायनागाग स्ट्रीट, ३ तल्ला
कमरा नं. – १८एच
कोलकाता–७०० ००१
मोबाईल – ९३३१०२९०७५

नाम : **श्री नीवेश अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– गुप्तेश्वर मेटल इण्डस्ट्री
ब्रह्मानीगांव, टांकुआ
कोरापुट–७६४००३ (उड़ीसा)
मोबाईल नं.– ०९४३७१८१३३१

नाम : **श्री गोविन्द विसलवासिया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– नीलम साड़ी इम्पोरियम
सदर बाजार, चाईबासा
पं. सिंहभूम (झारखण्ड)
मोबाईल नं.–०९४३०७३९४५९

नाम : **श्री विनोद कुमार सिंघानिया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– टेक्नोमेटल (इण्डिया) प्रा.लि.
५/२, गार्स्टिन प्लेस, ग्राउंड फ्लोर
कोलकाता – ७०० ००१
मोबाईल नं.– ०९३३०८७६७६४

नाम : **श्री राज कुमार बंका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– रीद्धि सिद्धि क्रिएशन्स
नयापाड़ा, सम्बलपुर–७६८००१
(उड़ीसा)
मोबाईल नं.–०९४३७२५४६७०

नाम : **श्री विमल कुमार बालासिया**
कार्यालय का पता :
१०, शंकर हल्दर बाई लेन
दूसर तल्ला
कोलकाता – ७०० ००५
मोबाईल नं.– ०९८३०५७१६६७

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री मोहन लाल दुजारी**
कार्यालय का पता :
५८, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट
कोलकाता – ७०० ००७
मोबाईल नं.–०९४३३०३७३७७

नाम : **श्री संतोष कुमार कानोड़िया**
कार्यालय का पता :
६, ओल्ड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट
''टेम्पल चेम्बर्स''
चौथा तल्ला, कोलकाता – ७०० ००१
मोबाईल नं.– ०९८३१०३१४१३

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्रीमती करुणा महिपाल**
निवास का पता :
'शिवांचल अपार्टमेन्ट'
१८१/३, कैनल स्ट्रीट (लेकटाउन)
दो तल्ला, कोलकाता – ७०० ०४८
मोबाईल नं.–९८३०५०६३७३

नाम : **श्री महेश महिपाल**
कार्यालय का पता :
१९, आरमेनियम स्ट्रीट
कोलकाता – ७०० ००७
मोबाईल नं.– ०९८८३०६१७१९

नाम : **श्री अरुण कुमार सुरेका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– इण्डियन ट्रांसपोर्ट सर्विस
२८, ब्लैक बर्न लेन, दूसरा तल्ला
कोलकाता–७०० ०१२
मोबाईल नं.–०९४३३०१६६१२

नाम : **श्री गोपाल प्रसाद झुनझुनवाला**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– जे.जे. इण्टरप्राइज
११९, महर्षि देवेन्द्र रोड
छठवाँ तल्ला, कमरा–१२, कोल–७
मोबाईल नं.– ०९८३१०४७४०१

नाम : **श्री राम गोपाल गुप्ता**
कार्यालय का पता :
रवि टेक्सटाइल
१४, नूरमल लोहिया लेन
चौथा और ग्राउंड फ्लोर, कोल–७
दूरभाष नं.–२२६९१४१०/२६२८

नाम : **श्री मांगी लाल साह**
कार्यालय का पता :
फैशन हाउस
एस.एन. प्लाजा, मेन रोड
जयपुर–७६४००१
मोबाईल नं.– ०९४३७२३६८००

नाम : **श्री श्रीनारायण सुरेका**
कार्यालय का पता :
काशीपुर टी कं. प्रा लि.
एफ.एम.सी. फारचूना, तीसरा तल्ला
रूम. नं–ए/४,२३४/३ए, ए.जे.सी.
बोस रोड, कोलकाता–७०० ०२०
मोबाईल नं.–०९०५१६५४४८५

नाम : **श्री रवी कुमार मोदी**
कार्यालय का पता :
भद्रा स्ट्रीट
जयपुर, कोरापोट–७६४००१
मोबाईल नं.– ०९४३७३७३६०७

नाम : **श्री महाबीर प्रसाद अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स–मां समलाई ट्रेडर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज
अग्रसेन मार्ग, खेतराजपुर
सम्बलपुर–७६८००३ (उड़ीसा)
मोबाईल नं.–०९४३७१४९३३७

नाम : **श्री देवेन्द्र कुमार लाठ**
कार्यालय का पता :
उड़ीसा टेक्सटाइल
गोल बाजार,
सम्बलपुर – ७६८००१, उड़ीसा
मोबाईल नं.– ०९४३७०५२०१०

राजस्थानी रीति रिवाज एवं उनका रहस्य

- इन्द्रचंद्र महरीवाल

कांगनडोरा : विवाह पूर्व लड़का – लड़की यानि वर – वधू दोनों को कांगनडोरा पहनाने की प्रथा आदि काल से ही चली आ रही है एवं सभी अग्रवाल भाई इसका पालन करते आ रहे हैं। लेकिन इस कांगनडोरा के मर्म–रहस्य प्रेरणादायक बात की जानकारी अधिकतर लोगों को नहीं है। विवाह के सम्बन्ध में उनके भावी जीवन के सुखमय होने की एक बहुत ही अच्छी प्रेरणादायक बात का द्योतक है – यह कांगनडोरा।

सर्वप्रथम यह जानें कि इस कांगनडोरे में क्या–क्या सामग्री प्रयोग में लाई जाती है और क्यों? तथा उसके क्या–क्या मतलब हैं–मुलतः कांगनडोरा में कुल ५ चीजें रहती हैं।

कांगनडोरा में छोटी सी पोटली बांधी जाती है जिसमें राई के दानों के साथ नमक बांधा जाता है उसके बाद एक लोहे का छल्ला, एक चांदी का छल्ला, एक लाख का छल्ला और अंत में एक कौड़ी बांधी जाती है। इस प्रकार कांगनडोरे के धागे में यहां पांच चीजों का प्रयोग किया जाता है। विवाह पूर्व शादी की रश्म चालू होने के समय विधिपूर्वक लड़का – लड़की दोनों के पैर में इस कांगनडोरे को बांधा जाता है एवं शादी की रश्म पूरी हो जाने पर विधिपूर्वक अन्य नेगचारों के साथ इस कांगनडोरे को खोल दिया जाता है।

राई नमक : राई नमक का मतलब है राई पुरुष रूप है एवं नमक स्त्री रूप है। विवाह रश्म के पहले जब राईनमक दोनों को पोटली में बांधते हैं तो दो होते हैं लेकिन जब विवाह बाद पोटली खोलते हैं तो सिर्फ राई ही नजर आती है – नमक नहीं। क्योंकि कहा गया है कि विवाह पूर्व आप तन – मन आत्मा से दो हैं लेकिन विवाह बंधन पश्चात आप शरीर मन आत्मा से एक हो जायेंगे। जिस प्रकार स्त्री रूप नमक राई में सम्माहित हो गयी उसी प्रकार स्त्री को चाहिये वह खुद को पुरुष में सम्माहित कर एकाकार हो जाए। जिस प्रकार राई ने नमक को ग्रहण कर लिया उसी प्रकार पुरुष को चाहिए वह स्त्री को अपने में सम्माहित कर लेवे। विवाह बंधन का मूल उद्देश्य है एक होना मन आत्मा से समर्पण की भावना एवं समर्पण को स्वीकार कर एकाकार होना एक गृहस्थ जीवन का प्रथम मूल मंत्र है।

लोहे का कड़ा : जब पति – पत्नी तन मन आत्मा से एक होकर गृहस्थ जीवन का प्रारंम्भ करते हैं तब भी कई प्रकार की बाधाएं एवं कठनाईयों का भी सामना करना पड़ेगा। तथा उनसे विचलित न होते हुए लोहे भर की कठोर छाती भी रखनी पड़ेगी। लोहे का छल्ला इसी बात का द्योतक है कि जीवन में लोहे भर की कड़ी छाती रखकर सभी तरह की मुश्किलों का सामना करोगे तो गृहस्थ की गाड़ी सुचारू रूप से चलती रहेगी एवं मुश्किल से मुश्किल काम भी आसान हो जायेगा।

चांदी का छल्ला : जब तन मन आत्मा से एक होकर लोहे भर की कड़ी छाती करके मुश्किलों का सामना करते हुए गृहस्थ जीवन की गाड़ी चलाओगे तो मन प्रसन्न रहेगा, शरीर में क्रान्ति आयेगी एवं चांदी की सी चमक हमेशा मौजूद रहेगी – यही है चांदी के छल्ले का मतलब एवं अभिप्राय।

लाख का छल्ला : जब एक मन आत्मा से कठोरता से जीवन चलाने पर प्रसन्नता की चमक रहेगी तो समाज में आप दोनों की लाख भर की इज्जत होगी – यानि लोग आपकी प्रशंसा करेंगे मन प्रसन्न रहेगा। कार्य की प्रशंसा होने से परिवार, समाज, गांव व शहर में आप लोगों की लाख भर की इज्जत होगी।

कौड़ी : विवाह बंधन में बंध करके सात वचन का पालन नहीं करोगे एकाकार नहीं होवोगे, एक दूसरे में समर्पण एवं समर्पित होने की भावना नहीं होगी दुःखों को झेलने की क्षमता नहीं होगी तो – न ही चांदी की सी चमक रहेगी, न ही लाख भर की इज्जत होगी, न ही गृहस्थ जीवन सुखमय होगा फलस्वरूप आप दोनों की कौड़ी भर की भी इज्जत नहीं रह जायेगी।

इस प्रकार विवाह पूर्व कांगनडोरा को बांधने का अभिप्राय नव विवाहित जोड़े को एक प्रेरणा संदेश देना है जिससे सुखमय जीवन एवं परिवार समस्त जीवन में इज्जत से रह सके।◆

''इस युवा जनादेश में बुजुर्गों का आशीर्वाद है''

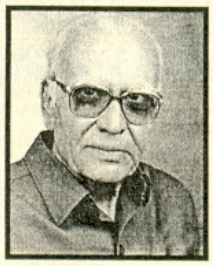

:: त्रिलोकीदास खण्डेलवाल ::

देश में राज्य विधान सभाओं के चुनाव का दौर सम्पन्न हुआ। जो भी राजनीतिक दल और व्यक्ति इस परीक्षा से निकल कर एक जनादेश लेकर आये हैं उनसे सभी मतदाताओं की यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि ये प्रतिनिधि चाहे शासन की सीटों पर बैठे या विरोध में, उन्हें ''उन आंखों के आंसू पोंछने चाहिए जो महात्मा गांधी के शब्दों में देश के सबसे दरिद्र दुखी एवं अशक्त इंसानों की आंखें हैं।'' सिद्धान्त और आदर्शों के चुनाव अभियान बहुत चल चुके। अब सभी जनप्रतिनिधियों के पास एक बहुत बड़ा अवसर है कि वे इस ''मूक और निरीह जनता'' की सच्ची सेवा में लगे। देश का स्वतंत्रता संग्राम केवल इसलिए नहीं लड़ा गया था, कि शासकों के सिर्फ चेहरे बदले जायें। अब जो हो रहा है वह भी एक दूसरा स्वतंत्रता संग्राम है, जो हमें अपने ही देशवासियों से इसलिए लड़ना है कि हमारे राष्ट्रवादी राज्य में ''लोकतांत्रिक सामन्तवाद'' या ''स्वदेशी उपनिवेशवाद'' किसी भी रूप में पैदा न हो सके।

सामाजिक न्याय सदियों से शोषित भारतीय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके आधार ढूंढने में गरीबी निशक्तता और पिछड़ेपन को 'अन्याय' मानने में अब कोई बहस भी नहीं है। बहस है तो सिर्फ यह कि किसे किस आधार से कितना अधिक दयनीय माना जाए। आरक्षण की बड़ी बहस में उलझे बिना इस तथ्य को सर्वानुमति से स्वीकार किया जा सकता है कि देश का जो नागरिक पैंसठ वर्ष की उम्र पार कर चुका और जिसके पास परिवार की सेवा या आर्थिक आमदनी का कोई स्रोत नहीं है वह इस देश में तरह तरह की पीड़ाओं, वंचनाओं और अवमाननाओं का शिकार है। उसकी दरिद्रता के अतिरिक्त उसके शरीर की अक्षमता, बीमारियों से लड़ने की असमर्थता तथा अकेले जीवन की दुखान्तिका इतनी पीड़ाप्रद है कि सरकार और समाज का यह सबसे बड़ा दायित्व बनता है कि वे चेहरे पर यदि मुस्कुराहट न ला सके तो कम से कम उन आंसुओं को तो पौंछे, जिसके लिए यह वृद्ध स्वयं उत्तरदायी नहीं है। उम्र का यह ढलान स्त्री और पुरुष दोनों की समान व्यथा कथा है। बुढ़ापा अगडे पिछले वर्ग नहीं देखता। महानगरों की शहरी जिन्दगी ने इस वृद्ध इंसान के सारे धार्मिक आधार स्तम्भ ध्वस्त कर दिए हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवायें उसकी पहुंच के बाहर हैं। परिवार के सदस्य और सगे सम्बन्धी भी अब उसकी परवाह नहीं करते। गरीबी की स्थिति में तो वह एक ऐसे घोर नरक में जी रहा है जिसमें स्वतंत्रता, समानता और न्याय इन तीनों ही शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं है।

इन वरिष्ठ नागरिकों की संख्या प्रतिवर्ष बड़ी तेजी से बढ़ रही है। **शहर की तनाव पूर्ण जिन्दगी में घुटते घुटते इनमें से अधिकांश अर्थटाइटिस, डाइबिटीज, हाइपर टेंशन, हार्ट और किडनी की बीमारियों को झेलते हुए कैंसर तक आ पहुंचे हैं। यहाँ पर ये लोग न जी सकते हैं और न मरना ही इन्हें समीप लगता है। बहुत से तो शहरी दौड़ भाग में अंधे, बहरे तक हो चुके हैं और विकलांगता की चपेट में आ जाने के कारण अपनी जिन्दगी को परिवार और समाज पर बोझ समझने लगे हैं।** स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव तो है ही पर इन्हें देखकर मुस्कुराने वाला भी कोई आज के जीवन में इन्हें नहीं मिलता। पश्चिम की तरह ये वृद्धावस्था में **''मनोवैज्ञानिक दाम्पत्य''** भी स्वीकार नहीं कर सकते। दूसरी पीढ़ी इनका सम्मान तो करती है पर इन्हें अपने घर में नहीं रखना चाहती। जिन्होंने बच्चों को विकास के सारे अवसर दिये उनके ये बच्चे अब विदेशों में बस गये हैं और उनकी व्यस्तता में उनके फोन सम्बन्ध भी पीड़ाप्रद लगते हैं। फिल्म बागलां की यह स्थिति यदि केवल लोकतंत्र और विकास के सहारे छोड़ दी गई तो भारत में वृद्धावस्था पूर्व और पश्चिम की दोनों दुर्गतियों का एक क्रूर मिश्रण बन कर रह जायेगी।

पश्चिम में इस त्रासदी से निपटने के प्रयास व्यक्ति, परिवार, समाज और राज्य चारों ही ने अपने अपने स्तर पर किये हैं। भारतीय समाज में व्यक्ति और परिवार में तो अभी यह सोच भी नहीं आया है कि बुढ़ापा कैसे कटेगा। इसलिए लोग अपने अपने परिवारों का रोना धोना रोकर किसी तरह भगवान के सहारे जिन्दगी काट रहे हैं। हमारे यहां समाज में चेतना की आवश्यकता है और समाज द्वारा संगठित सहायता के कुछ प्रयास अभी आरम्भ भी हुए हैं। पर हम सरकार से ज्यादा अपेक्षायें करते हैं। अभी सरकारें वृद्ध सेवा के क्षेत्र में आगे आये, सुविधायें जुटाये और व्यक्ति को उसकी जीवन की संध्या में ऐसा कुछ दे जिससे वह हंसते–हंसते अपनी यह इहलीला समाप्त कर सके। यह एक बहुत बड़ा कार्य है एक ऐसा पवित्र कार्य, जिसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग और सरकार के प्रत्येक अंग को भागीरथ प्रयत्न करने होंगे। कानून इस नीति की पहली आधारशिला बन सकता है और जो जन प्रतिनिधि अभी–अभी चुनाव जीत कर विधानसभा और लोकसभा में आये हैं। उनसे यह अपेक्षा करना एक लोकतांत्रिक मांग है कि वे समाज के उस नि:शक्त वर्ग की मूलभूत आवश्यकताओं पर ध्यान दे, जिनके आशीर्वाद को

पाकर वे इन कुर्सियों पर आकर बैठे हैं।

वृद्धावस्था की चार आवश्यकतायें होती हैं :–

१. एक स्वतंत्र आवासीय व्यवस्था
२. स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा सुविधा
३. साधारण जीवनयोपयोगी भोजन और
४. धार्मिक और आध्यात्मिक आनन्द जो सामाजिकता की कमी को पूरा करता है।

ये चारों सुविधायें संयुक्त परिवार की टूटन से घटी हैं। अत: वृद्धावस्था और चिकित्सा सुविधा केन्द्रों की मांग सरकार से की जा रही है। वृद्धावस्था पेंशन भी इन्हीं मांगों की सपूर्ति का हिस्सा है। सामाजिक सुरक्षा की यह मांग सरकार की नीतियों का एक अहम हिस्सा बन सके इसके लिए सभी दलों और प्रतिनिधियों को मिलजुल कर कार्य करना होगा।

सामाजिक सुरक्षा संस्थान, जयपुर जैसी संस्थाओं ने इस क्षेत्र में आगे आकर जनमत जगाने के क्षेत्र में स्मरणीय कार्य किया है। निजी और सरकारी क्षेत्रों में डे–केयर सेंटरों की एक श्रृंखला तैयार की जा रही है। पांच सौ रुपये प्रतिमाह की वृद्धावस्था पेंशन अब सभी दल उचित बतला रहे हैं। आवश्यकता है एक ऐसे कानून की जो सारे देश की राज्य सरकारों को इस न्यूनतम पेंशन राशि को देने के लिए (न्यूनतम रोजगार गारंटी योजना की तरह) पंचायती संस्थाओं और बैंकों के माध्यम से कानूनी सुनिश्चितता दे सके। इन निर्धन वृद्धों को यह विश्वास दिलाया जाना आवश्यक है कि वे अपने शेष जीवन में अपनी मासिक पेंशन के सहारे अपने वृद्धाश्रम में अपने सहचरों के साथ सुख से जी सकेंगे।

चुनाव के अवसर पर सभी दलों ने इस बुजुर्ग वर्ग से आशीर्वाद लिया है। चुनाव घोषणा पत्रों में उन्हें आश्वासन भी दिये गये हैं। अब समय आ गया है कि यदि आप शासक दल में हैं तो कानून बनवाएं और विरोध में बैठते हैं तो शासकों को याद दिलाएं कि चुनाव के समय किये गये इस वृद्ध सेवा के आश्वासन को पूरा करें।

वृद्ध सेवा प्राथमिकता के आधार पर सामाजिक न्याय की सम्पूर्ति में तात्कालिकता से आरम्भ की जानी चाहिए। पूरे देश में इस पर दो राय नहीं है। संसाधनों की कमी भी यदि हम चाहे तो बाधा नहीं रह सकती। कितने ही उद्योगपति धार्मिक संस्थायें, समाजसेवी और वरिष्ठ चिकित्सक इस पुण्य कार्य से जुड़ने के लिए तत्पर हैं। सरकार और निजी संगठन कानून की सीमा में इस ''वृद्ध सुश्रुषा'' कार्य को आरम्भ कर सकते हैं और जनता के प्रतिनिधि इसे अपनी जिम्मेदारी समझ कर यदि नई पहल कर सके तो हम इस चुनौती से सामूहिक रूप में लड़ सकेंगे। प्रबुद्ध वर्ग को चाहिए कि इस सेवा कार्य के लिए संगठित अभियान चलाये। सभी वर्गों का सहयोग ले और नये नये कार्यक्रमों के माध्यम से कल्याण राज्य की संकल्पना को भारतीय समाज में साकार करें।◆

–लेखक का पता: नवाब शाहेब की हवेली
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर – 302002

निवेदन

सेवा में,
महामंत्री महोदय,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152बी, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता–700 007

महोदय,

❑ कृपया मेरे पते में निम्न सुधार करने की कृपा करें।

❑ कृपया मेरी सदस्यता शुल्क बकाया के संदर्भ में मुझे जानकारी दें ताकि मैं उसे जमा करा सकूँ।

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विशिष्ट/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया निम्न पते पर मुझे एक सदस्यता फार्म डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

❑ विशिष्ट सदस्यता 500/–
❑ आजीवन सदस्यता 5000/–
❑ संरक्षक सदस्यता 51000/–

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'समाज विकास' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ। सदस्यता शुल्क 100/– चेक/मनि ऑडर/नगद द्वारा संलग्न।

मेरा वर्तमान पता निम्न है

नाम :.....
पता :.....
.....
शहर :.....
पिन कोड :.....
फोन नं. :.....
मोबाईल :.....
ई–मेल :.....

हस्ताक्षर

श्रद्धांजलि :

बाबूलाल बोहरा : एक प्रेरक व्यक्तित्व

- प्रो. रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

बाबूलाल बोहरा

''इदम् सर्वम् मृत्योरन्नमं। सृजन से विसर्जन,
जीवन से मृत्यु, विकास से विनाश, उतार से चढ़ाव,
उन्नति से अवनति, अनुकूलता से प्रतिकूलता,
सुख से दुःख अथवा पलट परिस्थिति।''

हम सब जानते हैं कि यह सृष्टि का नियम है। तथापि कई ऐसे अवसर आते हैं, जब हमें इस ज्ञान का विस्मरण हो जाता है। ऐसा ही हुआ जब यकायक, अकस्मात २२ जून २००८ को दूरभाष पर टाटा नगर के ओम प्रकाशजी अग्रवाल से यह सूचना मिली कि बाबूलालजी बोहरा चले गये, सदा के लिये। कानों को विश्वास नहीं। विवशता वश पूछा कि कहीं आपको भ्रम तो नहीं हुआ। रून्धे कंठ से शब्द सुनाई पड़े। ''काश! ऐसा होता।''

मेरे पास अब दूरभाष कर्त्ता से अपनी ओर से कहने को कुछ नहीं बचा था। पाँच मिनट मौन। जब अपना अन्तरंग कोई, एक झटके से बिना लेश मात्र भी संकेत दिये विदा हो जाय तो कौन पाषाण हृदय जिसने बाबू लालजी का विगत ३५, ४० वर्षों से सार्वजनिक जीवन में साथ व सहयोग लिया हो, बिना अश्रु पूरित हुए रह सकता है।

यहाँ प्रश्न किसी व्यक्ति विशेष से व्यक्ति विशेष के संबंधों का नहीं है। जाना आना विधि का विधान है। पर जब समाज की क्षति होती है किसी के जाने से, तो समाज की प्रतिक्रिया स्वाभाविक है।

श्री टाटा नगर गोशाला के बाबूलालजी प्रमुख स्तम्भ थे। मारवाड़ी समाज के माध्यम से झारखण्ड की उन्नति में बोहराजी का योगदान सर्व विदित था। बिहार झारखण्ड के आपस में बंटने पर सामाजिक स्तर पर होने वाले स्वाभाविक विवादों के समय जिन लोगों ने अपनी स्पष्ट भूमिका निभायी, उनमें बाबूलाल जी का योगदान ऐतिहासिक कहा जा सकता है। साहित्यिक, साँस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ टाटा नगर में बाबूलालजी के बिना अकल्पित थी।

इधर दो बातों को लेकर बाबूलालजी चर्चा के पात्र बने हुए थे, एक तो राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय गोशाला फेडरेशन के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये उन्होंने अपनी सक्रियता बढ़ा दी थी। दूसरे जमशेदपुर के संचालक के नाते देश के तीर्थों की यात्राओं का क्रम बढ़ा दिया था। उत्तराखण्ड के चारों धाम जमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ तथा दक्षिण में शैलमल्लिकार्जुन से लेकर रामेश्वर कन्या कुमारी पश्चिम में द्वारका, सोमनाथ उत्तर में वैष्णोदेवी, अमरनाथ की उनकी यात्राओं में ऐसे सैंकड़ों भाई बहनों को लाभ मिला जो आज बाबूलालजी के ऋणी हैं। जो हृदय से उनका आभार मानते हैं कि ये बाबू लालजी थे जिनके निश्च्छल प्रेम, समर्पण व सेवा भाव के चलते ऐसी दुरूह यात्रायें उन्होंने सम्पन्न कर लीं।

विगत अनेक वर्षों से बाबूलालजी का मुझसे आग्रह चल रहा था कि दून तीर्थ स्थलों की यात्रा में मैं उनका साथ रहूँ। उनके आग्रह के कारण मैं हाँ, हाँ करता रहा, पर अनेक पूर्व निर्धारित सार्वजनिक व्यस्तताओं के कारण समय नहीं निकाल पाया। इधर इनका आग्रह बढ़ता गया। मैंने देखा कि बचने का उपाय नहीं सूझ रहा है तो मैंने एक शर्त रखी कि ये यात्रायें केवल तीर्थों के दर्शनों तक सीमित न रहे, बल्कि कुछ लक्ष्य रहेंगे। यथा—भारतीय संस्कृति का संरक्षण, गोवर्धन, तम्बाकू मुक्ति अभियान एवं तीर्थों में स्वच्छता। बाबूलालजी ने न केवल उपरोक्त शर्त्त स्वीकार की अपितु इन यात्राओं का आयोजन मेरे सनिध्य में होगा, यह घोषित कर दिया। २००८ में उत्तराखण्ड की यात्रा दक्षिण में कन्या कुमारी रामेश्वर आदि की यात्रा। पुनः २००९ की १० जून को उत्तराखण्ड की यात्रा सम्पन्न हुई और आगामी दिसम्बर २००९ में द्वारका सोमनाथ तथा राजस्थान में माउंट आबू, जैसलमेर, बाढ़मेर जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, हल्दीघाटी, नाथद्वारा, पुष्कर, राणीसती झुंझुनूं, श्याम खाटूजी, सालासर के हनुमानजी व जयपुर की यात्रा का कार्यक्रम लगभग निश्चय हो गया। उनका यह भी आग्रह था कि गुजरात व राजस्थान की इस यात्रा में मेरे द्वारा इस बार श्रीमद् भागवत पर प्रवचन होगा। भविष्य में क्या होगा, क्या हो सकता है, कोई नहीं जानता। 'पल का तो ठिकाना है ही नहीं, कल क्या होगा क्या जानें।

बाबूलालजी कभी ए ग्रेड के नेता नहीं रहे। उन्होंने ए ग्रेड का नेता बनने का प्रयास भी नहीं किया। लेकिन अवश्य वे ए ग्रेड के कार्यकर्त्ता थे। कर्मठ, उत्तरदायी कार्यकर्त्ता। सबके सुख—दुःख में काम आने वाले। शादी हो या गमी, छोटा आयोजन हो, या बड़ा, बाबूलालजी से कहिये, सब कुछ सम्पन्न हो जाएगा। असमर्थ लोगों की सहायता करना बाबूलालजी का धर्म बन गया था।

एक सामान्य कद काठी का आदमी, न ठिंगना न लम्बा। सीधा सादा व्यक्तित्व, ललाट पर सदैव भगवान वासुकीनाथ का सिन्दूरी रंग का चमकता चन्दन का टीका। सदैव मुस्कराता चेहरा, आँखों में आँखे डाल कर हृदय उड़ेल देने वाला यह आदमी, इंसानियत से परिपूर्ण। शीघ्र क्षतिपूर्त्ति कठिन है बाबूलालजी की। उन्हें शत् शत् नमन। श्रद्धांजलि! धर्म पत्नि, छाया की तरह बाबूलालजी के कार्यों में हाथ बटाने वाली शारदा देवी, पुत्र राजेन्द्र व जीतेन्द्र भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं मात्र ७३ वर्ष की अवस्था में। ईश्वर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करें इसी प्रार्थना के साथ।♦

घनश्यामदास सराफ ट्रस्ट

५०वां सुनहरा वर्ष

मुंबई की सुप्रसिद्ध संस्था ''घनश्यामदास सराफ ट्रस्ट'' ने समाज कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करते हुए अपने ५० वर्ष के सुनहरे सफर को पूरा कर लिया है। पिछले पाँच दशकों की यात्रा में इस संस्था ने समाज के ज़रूरतमंद नागरिकों के लिए जो कल्याणकारी कार्य किये हैं, वे इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखे जाएंगे। हाल ही में ट्रस्ट के संस्थापक एवं प्रबंध न्यासी श्री महाबीरप्रसाद घ.सराफ ने 'तर्पण–५०' नामक स्मारिका का विमोचन किया है जिसमें संस्था द्वारा ५० वर्ष में किए गए प्रमुख कार्यों की झांकी प्रस्तुत की गई है।

गौरतलब है कि समाजसेवी व उद्योगपति सराफ ने समाज सेवा हेतु १९५९ में घनश्यामदास सराफ ट्रस्ट की स्थापना की थी। तब से अब तक उन्होंने इस ट्रस्ट के माध्यम से सैकड़ों लोक कल्याणकारी कार्य कर एक इतिहास रच दिया है। ७५ वर्षीय सराफ उम्र के इस पड़ाव पर पहुंचने के बावजूद आज भी उतनी ही लगन, कर्मठता व निष्ठा से सामाजिक कार्यों में लीन हैं जितना वह १९५९ में ट्रस्ट की स्थापना करते समय थे। उन्होंने समाज के हर क्षेत्र–धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, कला–साहित्य–संस्कृति, पत्रकारिता, स्वास्थ्य, खेल, मनोरंजन, नारी उत्थान, बाल विकास, विकलांग पुनर्वसन, नेत्रहीनों, गूंगा, बहरों, आदि के कल्याणार्थ जो कार्य किए हैं, उन्हें मुंबई वासी कभी नहीं भूला पाएंगे। उन्होंने समाजसेवा के कार्य को और अधिक गति प्रदान करने के लिए दुर्गादेवी सराफ ट्रस्ट, महाबीर प्रसाद सराफ ट्रस्ट, किरणदेवी सराफ ट्रस्ट, सुपरटेक्स फाउंडेशन नामक ट्रस्टों की स्थापना की है। पिछले ५० वर्षों से समाजसेवा का परचम लहराने वाले सराफ धर्म, जाति व प्रांत के भेदभाव के बिना तन्मयता से सक्रिय हैं और गरीब व ज़रूरतमंदों की हर प्रकार से सहायता कर रहे हैं।

सराफ ने लोक कल्याणकारी कार्यों के तहत सर्वप्रथम श्री हनुमानजी मंदिर की स्थापना की। तत्पश्चात सराफ मातृ मंदिर (धर्मशाला), थके–हारे लोगों को बैठने के लिए सार्वजनिक स्थानों– उद्यानों, खेल के मैदानों, समुद्र तटों, रेलवे स्टेशनों, पुलिस स्टेशनों, पुलिस चौकियों, आरटीसों एवं महानगरपालिका कार्यालयों, स्कूल–कालेजों–विश्वविद्यालय परिसरों, मंदिर–मस्जिद–चर्च– गुरुद्वारों के प्रांगणों, अस्पतालों, कोरोनर्स कोटों, पुनर्वास केंद्रों, खेल स्कूलों, स्वीमिंग पुलों, श्मशानों, फूटपाथों आदि पर अब तक १६३३५ से अधिक आरसीसी बेंचें स्थापित कर चुके हैं और यह कार्य निरंतर जारी है। इस योगदान को लिमका बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में तीन बार दर्ज किया जा चुका है। रेल यात्रियों की प्यास बुझाने के लिए उन्होंने शहर के रेलवे स्टेशनों पर ९८ प्याऊ का निर्माण कराया है जिसे लिमका बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में सर्वाधिक प्याऊ बनाने के लिए दर्ज किया गया है।

मरीजों की जाँच व इलाज के जरीए स्वास्थ्य सुधार व चिकित्सा सेवाओं के लिए नानावटी अस्पताल में १०००० वर्ग फिट में फैला दुर्गादेवी सराफ ओपीडी तथा प्रसूति वार्ड, वी.एन. देसाई अस्पताल में बर्न्स वार्ड, आई ओपीडी वार्ड और विविध अस्पतालों व चिकित्सकीय संस्थानों को उन्होंने १९ एंबुलेंस का दान किया है। इसी प्रकार नारी शिक्षा व उनके उत्थान हेतु घनश्यामदास सराफ गर्ल्स कॉलेज एवं दुर्गादेवी सराफ जूनियर कॉलेज, सिलाई मशीनों, सिलाई कक्षाओं, बालिका अनाथालय का जिर्णोद्धार, ५ सामाजिक सभागृहों, ६ सार्वजनिक शौचालयों, क्लास रूम, कम्प्यूटर केन्द्रों, थेरेपी सेंटर, वृद्धा आश्रमों में कक्षों, पब्लिक लाइब्रेरी, व्यायाम केन्द्रों, लर्निंग सेंटर, किरणदेवी सराफ इंस्टीट्यूट, किरणदेवी सराफ सेंटर ऑफ एक्सेलेंस, बोरवेलों, बालवाडियों, बाल मंदिर की स्थापना की तथा विद्यार्थियों को स्कूली वस्तुएं वितरित की। इसके अलावा मुफ्त नेत्र शिविर प्रायोजित कर चश्मों का वितरण किया है। कला–साहित्य–संस्कृति और पत्रकारिता के क्षेत्र में आर्थिक सहयोग देकर उन्होंने सैकड़ों लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित कराया और वार्षिक साहित्य पुरस्कार, रास गरबा एवं गीतगान स्पर्धा प्रायोजित की। उसी प्रकार खेल–कूद के प्रोत्साहन हेतु अनेक पुरस्कार, वजीफों, ट्रॉफी, शिल्ड व शैक्षणिक मदद की और ये कार्य अब भी जारी हैं।

कुल मिलाकर मानव कल्याण के लिए किए गए सराफ के कार्य ठाणे से छत्रपति शिवाजी टर्मिनल तक और विरार से चर्चगेट तक, शहर के विविध रास्तों, गली–कूचों में फैल हुए हैं जिन पर लोगों की निगाहें सहज ही पड़ती हैं। सराफ के इन सामाजिक कार्यों में उनकी पत्नी, पुत्र, बहुएं, पोते व पोतियां भी उनका हाथ बंटाती हैं। मुंबई जैसे व्यस्ततम शहर में शायद ही कोई ऐसा परिवार हो, जो मानव कल्याण कार्यों में इतने तन–मन–धन से लगा हो।

इन कल्याणकारी कार्यों के उपलक्ष्य में सराफ को महामहिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, केन्द्रीय मंत्री, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, मुंबई प्रदेश यूथ कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, लायंस इंटरनेशनल, रोटरी इंटरनेशनल, जायंट इंटरनेशनल तथा कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने सम्मानित किया है और अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया है।◆

भारतीय संसदीय गणतंत्र

कई चुनावी विजय, पराजय से अधिक लज्जित करती है, जबकि कुछ चुनावी पराजय– विजय से अधिक सम्मानजनक हाती हैं

– महामहिम गोपालकृष्ण गाँधी, राज्यपाल, पं.बंगाल

पश्चिम बंगाल सयुंक्त राष्ट्रसंघ संस्था द्वारा गत 25 जुलाई 2009 को ''भारतीय संसदीय गणतंत्र'' विषयक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए महामहिम श्री गोपालकृष्ण गाँधी, राज्यपाल, पं.बंगाल के अति महत्वपूर्ण, विचारोत्तेजक, विद्वतापूर्ण एवं सारगर्भित अभिभाषण ने सभी श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। कवितामय अंग्रेजी में दिये गये इस भाषण को हम हूबहू अंग्रेजी में ही प्रकाशित कर रहे हैं – संपादक

(बायें से दायें) सर्वश्री पी.ए.संगमा, राज्यपाल गोपालकृष्णगांधी, सोमनाथ चटर्जी एवं सीताराम शर्मा।

Observations of Shri Gopalkrishna Gandhi, Governor of West Bengal

At the Inauguration of a National Seminar on Indian Parliamentary Democracy

Organized by

West Bengal Federation of United Nations Associations

Gorky Sadan, 25 July, 2009

The Constitution of India was made by the good for the honest. It is worked by the wise for the experienced. This marks a maturing of our Republic. It also tells us that the timber of our parliamentary functioning is being seasoned in varied waters.

Over six decades and 94 amendments after the people of India gave unto themselves that great enactment, it is not surprising that some feel 'Should we not take a re-look at the Constitution, it is quite old'.

Age is no weakness when the health is sound. Our Constitution has stood the test of time and has given us institutions and arrangements which have suited our genius quite admirably and have reflected our instincts.

I recall President K R Narayanan saying from the floor of the Central Hall of Parliament, at a time when a review of the Constitution had been announced, 'Our Constitution has not failed us; we have failed the Constitution'.

It would be good for us to see how we can measure up to the ideals of the Constitution.

Elections are our pride; they can also be a privation.

They bring out the best in us; they reveal the worst.

They excite us; they exhaust us.

They can, like a good monsoon, bring hope.

They can, as in a failed monsoon, bring gloom.

This is not about who wins and who loses. It is about *what* wins and *how,* and *what* loses and *why.*

Elections generate faith; in some cases, they are known to have generated fear. Faith, in their power to reaffirm trust, or to re-position it. Fear, over their knack to uncork violence, unleash vendetta.

In an election, it is the candidate's message of the manifesto that is supposed to win the vote. And so it does.

But, smiling in its sleeve, so does money. This, of course, is an unusual fact and not an Indian phenomenon.

One cannot fight an election on good wishes. Expenses have to be incurred; they always have. But the flow of currency in elections has grown from a small stream into a river in spate.

Some election victories have been the progeny of intimidation. As undisguised as they are ugly.

Murders in an election are an abomination. And yet they have become a reality.

"संविधान ने हमें निराश नहीं, बल्कि हमने संविधान को निराश किया है।"
"प्रतिवाद– हमारे जीवन्त समाज का प्रतीक है; लेकिन पूरे राज्य या क्षेत्र में 'बन्द' करना बुद्धिमतापूर्ण नहीं है।"
"भारत मध्य युग की तरह 'अचल' हो सकता है, लेकिन निर्मल एवं शीतल भी।"

The great majority of our legislators win clean. They win because they have persuaded their voters to vote for them, helped perhaps by a certain mood in the air, a *hava*. But some - *not* a microspic number - win under different auspices.

Certain victories can be more embarrassing than defeats, certain defeats more honorable than victories.

I said elections exhaust, they can be a privation. This is so because, apart from the quantities of money and energy used up, they also sap one's emotions.

In many electoral contests, expletives oust argument, insults displace analysis. Most candidates in India's elections - all honor to them – have kept their heads above the din. They have fought clean, won clean. But some have authored dictionaries of slang the etymologies of which are best left unexplored.

Most slogans coined for elections are unobjectionable, even witty. It does not matter that they often elevate the candidate to a size larger than Nature's intentions. But some slogans and statements hurt. There is a word in Sanskrit which describes the hurt caused by an arrow that goes so deep that even the feathers at its blunt end get lodged in the victim's flesh.

As the seed, so the fruit.

At times such as the present when global meltdown, global terror and global warming are distorting life as we know it, our public life cannot afford the luxury of acrimony, much less of violence, in the political arena.

We live in times of serious challenges some of which are old, some new.

Whether we ascribe it to global warming or to more localized causes such as cyclone ***Aila***, the hard fact is that the south-west monsoon is now all but lost. This means that, as a nation which has to find food and water for 1.2 billion people, we may well be facing a serious problem.

Looking beyond the monsoon, but directly connected, we can see that our glaciers have shrunk dramatically, rivers across the country flow thin and our reservoirs hold half or even less than what they should. Supply lines for power and water are, therefore, panting to meet demands; electricity and water supply agencies draw irate crowds. The rising of sea levels could see climate-refugees coming into our country, triggering altogether new concerns. Scarcity and security are inter-related Development and disturbed conditions go ill together.

Business can, therefore, no longer be 'as usual'. And this includes the public life of our country. And yet it seems to be precisely that. In a situation such as this, the making and hurling of 'bombs' and the use of fire-arms whether 'pre' or 'post' polls, or co-extensively with polling, the illicit stockpiling, circulating and use of such arms, politically motivated murders, the attacking and torchings of political offices, the obstructing of ministers and public servants or the assaulting of elected representatives, the barter of abusive words and the calling of crippling bandhs and gheraos must cease. To lodge a protest against a decision or a move is the right of every citizen or a group of people. It only shows that our society is 'alive' and not 'mechanical'. But the immobilizing of an entire area or a State or citizen services by bandhs or blockades is unwisdom. Of the lowest and most dangerous kind.

It is time we, as a people, made an ecologically responsible citizenship and a politically responsible democracy a goal that cannot be compromised. That has to be the bedrock of our parliamentary democracy, of our nationhood. Without it, parliamentary democracy and the

process of elections will lose meaning. It is time for sagacious leaders of public opinion and for our legislators in particular, to work *in* the short-term, but *for* the long-term. Shri Somnath Chattopadhyay's Speakership has shown the way. I had spoken of our elections.

Parliamentary democracy in India is a tree that bears the sweets, the sours and the bitters of India's elections, the honourable fight, decently won and the opposite. Those fights, with all that is good in them and all that is not, carry victorious candidates onto their legislative seats. They also carry the tensions and the antagonisms. These should refract into healthy debate. They do not always do so.

Naturally, therefore, Parliament set up an Ethics Committee! All credit to it.

To the tensions of the life of a legislature has been added the phenomenon of coalitions. Born, often, in the short-term, they can and do shape the long-term. The shape varies, That is the kind of fluxion in which the House requires a still-centre.

And this is where the last Lok Sabha found its still-centre in the Speakership of Sri Somnath Chattopadhyay. His has been the gift of balance to excess, of measure to abandon, of ballast to turbulence. Combining the acumen of the first Speaker G V Mavalankar, the effectiveness of the second Speaker Ananthasayanam Ayyangar and the mastery of rules that characterized the third Speaker Sardar Hukam Singh, Somnath babu brought to the Speaker's Chair the pre-eminence it is meant to have. Between the hour hand of discussions, the minute hand of adjournment motions, and the pulsating needle that ticks excitably, second by second in terms of reactions, Somnath babu was the steady pendulum. Somnath babu knew, through and through, the parliamentary method as a so-called 'ordinary[1] member of many terms - and a fairly vociferous one at that. This only helped his naturally-confident incumbency of that high office.

In the acoustic requirements of his office Somnath babu was helped by his strong vocal chords. But that facility would have availed little had it not been but an aid to his uncommonly agile mind and his legislative reflexes. A Speaker has to be fairly unforgiving from the Chair. But he can be very forgiving in his Chambers. And that Somnath babu has been. Only he knows how many times those that defied him in public, sought his indulgence in private. Only he knows how many of those who made promises to him in his Chambers broke them on the floor of the House. And came later to apologise.

We in our beloved State can be proud that one so steeped in the political and legal life of West Bengal and in its cultural and educational dimensions, should have crowned his legislative career with a Speakership that will not be forgotten by the country as a whole.

I will conclude by saying that our country is altogether unique in the way, as a parliamentary democracy, it copes with its despondencies, its disappointments, its crises. I do not know of any other country which can alternate between crisis and catastrophe as ours does - and overcomes the challenge. How many countries in the world are plagued as ours is, by terrorism - cross-border and home-grown? How many countries face up to natural disasters, in which thousands are affected, like ours? Where else can we find an example of one billion and more people, of varying backgrounds, multi-lingual and multi-religious in a multi-party scene - and thanks to improved health services, multiplying and coming together in the spirit of democracy, as a *mahasagar* that Rabindranath sang about? Where else can we find the tremendous advances made by a nation in a system that is not just in form democratic but vibrantly so? And where else in the world will a Government be bold enough to work towards a unified identification number to give to each of its citizens. We can be proud.

Our Parliament and legislatures have also given us a formidable body of legislation, the like of which can hardly be found anywhere. The last Lok Sabha itself, presided over by Somnath babu, has given us enactments which can re-shape our national life. I will mention just three, the National Rural Employment Guarantee Act, The Right to Information Act and the Act against Domestic Violence. These are not just pioneering but, in my opinion, epoch-making. They are the products of our parliamentary democracy, reflecting the deepest social introspection.

India can be Achal like the middle ages but it can also be Nirmal and Shital as befits a new millennium, reflecting not the multiple confusions of a fractured India but the self-enquiring, self-correcting, self-renewing impulse of our nation which is also a civilization. And the credit for that has to go, in no small measure, to the perennial stream of our elected legislators which flows from that Gomukh of our Republic that can never shrink. ◆

कोलकाता में महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा स्थापित

पूरे देश में पूजनीय हैं महाराणा प्रताप

- जनरल शंकर रायचौधरी

मूर्ति विवरण:
कोलकाता नगर निगम से स्वीकृति: 11.1.2007
मूर्ति बैठाई: 11.07.2009
मूर्ति उद्घाटन 15.08.2009

मूर्तिकार:
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्तिकार
श्री गौतम पाल, कोलकाता
आधार: 8 फीट मूर्ति : 13 फीट
वजन: 3 टन कांस्य की मूर्ति

महाराणा प्रताप की प्रतिमा लोकार्पण के अवसर पर परिलक्षित हैं
बाएँ से सर्वश्री अनुराग नोपानी, जुगलकिशोर जैथलिया, मूर्तिकार गौतम पाल, डॉ. गुलाब कोठारी, विधायक दिनेश बजाज, जनरल शंकर रायचौधरी, अरूण मल्लावत, शार्दूल सिंह जैन एवं चन्दन राय।

कोलकाता, १५ अगस्त २००९। 'महाराणा प्रताप की राष्ट्रभक्ति एवं उनका दृढ़ चरित्र पूरे देश के लिए सदैव प्रेरणा–स्रोत रहा है। वे किसी एक प्रान्त के या जाति के न हो कर स्वामी विवेकानन्द एवं शिवाजी की तरह पूरे देश के हैं, अत: हमारी नई पीढ़ी को उनके शौर्य, उदारता एवं स्वतंत्रता के प्रति दीवानगी का सटीक परिचय कराने हेतु देश के कोने–कोने में उनकी मूर्त्तियाँ स्थापित की जानी चाहिए। प्रताप ने उस काल के सबसे शक्तिशाली सम्राट अकबर से अपनी आजादी की रक्षा के लिए कठिन संग्राम लड़ा था। इस संग्राम में अकबर की तरफ से मानसिंह एवं जसवंतसिंह जैसे राजपूत थे, तो प्रताप की तरफ से हकीम खाँ सूर जैसे पठान सेनापति भी थे। अत: यह युद्ध विस्तारवादी अकबर के साथ आजादी की रक्षार्थ था–साम्प्रदायिक नहीं।'–ये उद्गार हैं भारत के पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल शंकर रायचौधरी के जो उन्होंने राजस्थान परिषद द्वारा मध्य कोलकाता में 'सेन्ट्रल मेट्रो स्टेशन' के सामने 'त्रिकोणिया पार्क' में चेतक घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप की १३ फुट ऊँची भव्य कांस्य मूर्ति का लोकार्पण करने हेतु स्वतंत्रता दिवस के दिन आयोजित एक विशेष समारोह में प्रकट किये। जब श्री रायचौधरी ने विद्युत संचालित बटन दबा कर मूर्त्ति का उद्घाटन किया तो तालियाँ, शंखध्वनि एवं भारत माता तथा राणा प्रताप की जय–जयकार से पूरा समारोह स्थल गूंज उठा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक श्री गुलाब कोठारी ने महाराणा प्रताप की तरह संकल्पवान और स्वाभिमानी बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज के युग में महाराणा प्रताप की प्रतिमा की स्थापना तभी सार्थक हो सकती है जब हर व्यक्ति इस प्रतिमा के आगे दो क्षण रुके और उनकी तरह संकल्पवान व स्वाभिमानी बनने का निश्चय करे। श्री कोठारी ने कहा कि ऐसा कर आप सभी अपने–अपने क्षेत्र में महाराणा प्रताप बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि संकल्प, जिन्दगी और कार्य अलग–अलग नहीं हैं। संकल्प के अभाव में व्यक्ति चौपाया और संकल्प से चतुर्भुज बन सकता है। भावी पीढ़ी के लोगों को संकल्प के लिए प्रेरित करने की जरूरत है, तभी वे नायक बन सकेंगे। श्री कोठारी ने कहा कि यह विडम्बना है कि वर्तमान शिक्षा केवल नौकरी दे सकती है, संस्कार नहीं। आज युवा पीढ़ी का झुकाव सिनेमा व इंटरनेट की ओर बढ़ रहा है, लेकिन इसके सही इस्तेमाल की जरूरत है, ताकि सही जीवन का निर्माण हो सके।

समारोह का प्रारंभ राष्ट्रगीत 'जन–गण–मन.....' एवं **सत्यानन्द विद्यापीठ** की बालिकाओं के द्वारा संस्कृत में **स्वस्तिवाचन** से हुआ। तत्पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश बजाज (विधायक) ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित विशिष्ट जनों का स्वागत करते हुए राजस्थान परिषद द्वारा

श्री दिनेश बजाज, विधायक ने मूर्त्ति निर्माण के प्रयासों के दीर्घ प्रयत्न का भी विस्तार से वर्णन करते हुए मूर्ति स्थापना के कार्य को ऐतिहासिक बताते हुए इसमें सहयोग हेतु विशेषकर पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत, सुश्री ममता बनर्जी, श्री सुब्रत मुखर्जी, स्व. सत्यनारायण जी बजाज, राज्य सरकार एवं नगर निगम को धन्यवाद दिया।

महाराणा प्रताप की प्रतिमा लोकार्पण के बाद उद्‌बोधन करते हुए पूर्व थलसेना अध्यक्ष जनरल शंकर राय चौधरी। मंच पर बैठे हुए हैं बाएँ से बेगम रेहाना खातून, शार्दूल सिंह जैन, डॉ. गुलाब कोठारी, जुगलकिशोर जैथलिया, विश्वम्भर दयाल सुरेका एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री सत्यव्रत मुखर्जी। पीछे में पूर्व उप महापौर मीना पुरोहित, पार्षद सुनीता झंवर, अरूण मल्लावत, रूगलाल सुराणा एवं नन्दलाल शाह, सुशील ओझा एवं भंवरलाल मूंधड़ा

इसके पूर्व कोलकाता महानगर में प्रताप की स्मृति में किये गये पार्क एवं सड़क के नवीन नामकरण के प्रयासों का उल्लेख किया एवं मूर्त्ति निर्माण के प्रयासों के दीर्घ प्रयत्न का भी विस्तार से वर्णन करते हुए मूर्ति स्थापना के कार्य को ऐतिहासिक बताते हुए इसमें सहयोग हेतु विशेषकर पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत, सुश्री ममता बनर्जी, श्री सुब्रत मुखर्जी, स्व. सत्यनारायण जी बजाज, राज्य सरकार एवं नगर निगम को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम के संयोजक श्री जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि बंगाल की भूमि सदैव शौर्य एवं संस्कृति की उपासक रही है, इस नाते यहाँ के अनेक साहित्यकारों ने प्रताप का यथेष्ट गुणगान किया है। श्री जैथलिया ने स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा अपने पत्र 'प्रताप' में महाराणा प्रताप के बारे में लिखे गये भावोत्तेजक उद्‌गारों को पढ़ कर सुनाते हुए श्रोताओं को भावविह्वल कर दिया। श्री जैथलिया ने कहा कि प्रताप ने राजा होते हुए भी अपने को राज्य का दीवान एवं भगवान् एकलिंग को ही राज्य का स्वामी मानते हुए अपना जीवन स्वाधीनता की रक्षा एवं लोक कल्याण हेतु समर्पित कर दिया, इसी कारण वे जन–जन के प्रिय बने एवं उनके द्वारा लड़ा गया युद्ध सच्चे अर्थों में जनयुद्ध बना।

समारोह की विशिष्ट अतिथि व पार्षद बेगम रेहाना खातून ने साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने पर जोर दिया एवं सभी अच्छे कार्यों में सहयोग देने का आश्वासन दिया। परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दूलसिंह जैन ने मूर्त्तिकार श्री गौतम पाल का भव्य मूर्त्ति निर्माण हेतु अंगवस्त्र देकर सम्मान किया तथा इस ऐतिहासिक यज्ञ में सहयोगी बने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री रुगलाल सुराणा 'जैन'ने किया। मंच पर परिषद उपाध्यक्ष द्वय श्री परशुराम मूँधड़ा एवं श्री नन्दलाल शाह, महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, उद्योगपति श्री बी.डी. सुरेका, पत्रकार श्री विश्वम्भर नेवर एवं भाजपा अध्यक्ष श्री सत्यव्रत मुखर्जी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिमा निर्माण हेतु अर्थ सहयोगियों में से एडवोकेट श्री सज्जन कुमार तुलस्यान एवं उद्योगपति सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद मोदी, श्रीकिशन खेतान, घनश्याम अग्रवाल, बनवारीलाल सोती एवं बालकृष्ण माहेश्वरी विशेष रूप से उपस्थित थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ अधिकारियों में सर्वश्री श्रीकृष्ण मोतलग, कालीदास बसु, केशव राव दीक्षित एवं अन्य कई प्रान्तीय स्तर के अधिकारी उपस्थित थे। सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ताओं में भाजपा के पूर्व अध्यक्ष तथागत राय, महामंत्री राहुल सिन्हा, पूर्व उप मेयर श्रीमति मीनादेवी पुरोहित, पार्षद श्रीमति सुनिता झँवर, पूर्व पार्षद श्री शांतिलाल जैन एवं श्री जगदीश मित्रा, राजस्थान ब्राह्मण संघ के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, पारीक सभा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल पारीक, वरिष्ठ समाजसेवी श्री पुष्करलाल केडिया, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सर्वश्री घनश्याम दास बेरीवाल, श्रीगोपाल करवा एवं नागरिक परिषदों के अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री सम्पत मानधन्या, डॉ. अनुराग नोपानी, भँवरलाल मूंधड़ा, किशन झँवर, सुशील ओझा, बंशीधर शर्मा, महावीर बजाज प्रभृति कार्यकर्ता सक्रिय थे।◆

युगपथ चरण :

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

शिक्षा व्यवसाय बनती जा रही है

- नन्दलाल रुँगटा

कोलकाता। शिक्षा समाज के विकास की रीढ़ है। दुर्भाग्यवश आज शिक्षा भी महंगी होती जा रही है परिणामस्वरूप गरीब परिवार के बच्चे अपनी पढ़ाई को पूरी नहीं कर पाते हैं। पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष की ओर से गत शनिवार को छात्रवृत्ति दी गयी। भारतीय भाषा परिषद में आयोजित २०वें छात्रवृत्ति वितरण समारोह में राज्य के ९० स्कूलों के ४०० छात्र–छात्राओं को कुल सात लाख रुपये के चेक सौंपे गये।

उद्घाटन भाषण में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि शिक्षा भी व्यवसाय बनती जा रही है। धनाभाव में किसी बच्चे को शिक्षा ना मिले यह समाज के लिये दुर्भाग्यपूर्ण होगा। समारोह में स्वागत भाषण संस्था के अध्यक्ष मामराज अग्रवाल ने दिया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि प्रह्लाद राय गोयनका व समाजसेवी जगदीशचन्द्र एन मूंधड़ा, मुख्य वक्ता छपते–छपते समूह के संपादक विश्वम्भर नेवर, संयोजक सुरेश अग्रवाल, आत्माराम सोंथलिया, आर.एन. झुनझुनवाला, कृष्ण कुमार लोहिया, एम.एल. सराफ, प्रधान सचिव, बाबूलाल अग्रवाल, सचिव घनश्याम शर्मा समेत कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह में मारवाड़ी बालिका विद्यालय की छात्राओं ने नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की। कोषाध्यक्ष किशन बजाज ने धन्यवाद ज्ञापन किया।◆

१५ अगस्त २००९:

सम्मेलन कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस

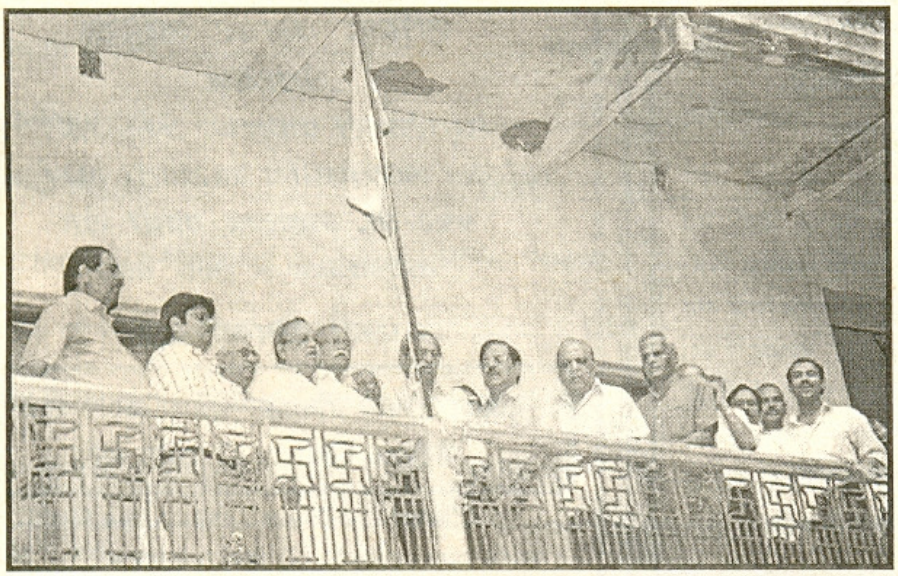

१५ अगस्त २००९ को सम्मेलन कार्यालय में सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया झंडा फहराते हुए। साथ दे रहे हैं– सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री गोविन्द शर्मा, श्री संजय हरलालका, श्री राम निवास चोटिया, श्री वंशीलाल बाहेती, श्री नन्दलाल सिंघानिया एवं अन्य सदस्यगण।

हैदराबाद में आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री का अभिनन्दन

हैदराबाद : भाषा, साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति के लिए लगभग ६० वर्षों से अपनी निरंतर सेवाएँ प्रदान कर रहे लगभग ९१ ग्रंथों के रचनाकार विद्वान मनीषी व नगर में हिन्दी एवं संस्कृति के छात्रों के लोकप्रिय आचार्य डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री का अभिनन्दन एक भव्य समारोह में किया गया।

आचार्य डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री ने अभिनन्दन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने इस सम्मान की कल्पना नहीं की थी। उन्होंने इस अवसर पर अपनी एक रचना सुनाते हुए आभार प्रकट किया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे हिन्दी दैनिक 'मिलाप' के समाचार संपादक रामजी सिंह 'उदयन' ने कहा कि समाज के लिए वेदप्रकाशजी की विद्वत्ता ध्वजारोही है। इससे पूर्व समारोह समिति के स्वागताध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने आचार्य श्री एवं अतिथियों का स्वागत किया। वृद्धावस्था के बावजूद आचार्य वेदप्रकाश से श्रद्धा रखने वाले लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन भी किया गया। जिसका संपादन दिवाकर पाण्डेय ने किया।

ओमप्रकाश चौधरी
चेयरमैन नियुक्त

आदर्श लोकसेवा केन्द्र (रजि.१९९३) के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग ११ जून २००९ को हुई जिसमें सर्व सम्मति से श्री ओमप्रकाश चौधरी को आदर्श लोकसेवा केन्द्र, मुम्बई के चेयरमैन पद पर ५ साल के लिये नियुक्त किया गया है। बोर्ड मीटिंग की अध्यक्षता श्री प्रफुल्लकुमार भागवत ने की। नये बोर्ड के गठन का भी कार्यभार श्री ओमप्रकाश चौधरी को सौंपा गया। श्री चौधरीजी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया तथा विश्वास दिलाया कि आदर्श लोकसेवा केन्द्र के आदर्शों का पालन पूरी लगन एवं शक्ति से करेंगे।◆

सूचना

सदस्यता डाइरेक्टरी का प्रकाशन जल्द ही होने जा रहा है। कृपया आप अपना विवरण संलग्न फार्म में भरकर भेजें।

आपको सूचित करते हुए अपार खुशी हो रही है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों की डायरेक्टरी सन् २००९-२०१० का प्रकाशन करने जा रहा है।

सदस्यता सूचना फार्म पृष्ठ पाँच पर दिया जा रहा है। जिसे आप शीघ्रातिशीघ्र भरकर निम्न पते पर भेजने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

: फार्म भेजने का पता :
रवीन्द्र कुमार लड़िया
चेयरमैन,
डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता - ७०० ००७

फार्म संलग्न ⇨

कृपया 'समाज विकास' पत्रिका को न फाड़ें।
जेरोक्स कॉपी का ही प्रयोग करें।

(Please Use Zerox copy of This Form)

E-mail: samajvikas@gmail.com ESTD. 1935 Tele Fax: (033) 2268 0319

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. Under W.B. Societies Act- XXVI of 1961)

152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata- 700 007

MEMBER INFORMATION FORM

(Please Use Zerox copy of This Form)

Photo

Photo

Full Name : .....

Father's / Husband's Name : .....

Address (Office) : .....

..... Pin Code : ..... State : .....

Phone Nos. With STD Code : ( ) .....

Address (Residence) : .....

..... Pin Code : ..... State : .....

Phone Nos. With STD Codes : ( ) .....

Mobile No. : ..... Fax : ( ) .....

E-mail : ..... Website : .....

Date of Birth : ..... Mariage Date : .....

Qualification : ..... Occupation : .....

Native Place : ..... Dist. : ..... State : .....

Married / Un-Married:..... Wife Name : .....

Name of Home Branch : ..... Dist. : ..... State : .....

Your Position in state / National Committee : .....

Your Membership-Branch / State / National Type of Membership : .....

Note : ◆ Please Enclose (2) passport size photo

◆ Name of the members & State written on the reverse of the photograph.

श्रद्धांजलिः

संग्रामी नेता सुभाष चक्रवर्ती को

पं. बंगाल राज्य के परिवहन तथा खेल मंत्री श्री सुभाष चक्रवर्ती का कोलकाता में पिछले दिनों निधन हो गया। उल्लेखनीय है कि माकपा के संग्रामी नेता का जन्म १८ मार्च १९४२ को ढ़ाका में हुआ था। आपके पिता का नाम हेम चक्रवर्ती का निधन के बाद वे अपने पीछे पत्नी रमीला चक्रवर्ती तथा एक पुत्र को छोड़ गए। बचपन में ही पूर्वी बंगाल जो अब बंगलादेश है में सब कुछ छोड़ कर आपका पूरा परिवार विभाजन पश्चात् भारत में आकर बस गया। बाद में उन्होंने कृष्णकुमार हिन्दू अकादमी से मैट्रीकुलेशन की परीक्षा पास की। कला विभाग में उन्होंने दमदम के मोतीझील कॉलेज से ६०–६१ में स्नातक की। राजनीति में उनका प्रवेश छात्र आंदोलन के माध्यम से हुआ स्व. वरूण सेन गुप्त तथा अनन्त दत्त उनके राजनीतिक गुरू थे। आगे चल कर आपने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु को अपना आदर्श मानने लगे। छात्र संगठन से आपने राजनीति जीवन का सफर शुरू किया। आप १९८२ में पहली बार मंत्री बनें, तब से लगातार आप मंत्री पद पर आसीन रहे। स्पष्टवादी विचारधारा के धनी श्री सुभाष दा कई बार अपनी मुखवाणी से माकपा की विचारधारा को बदल डालते थे। मारवाड़ी समाज से इनका काफी घनिष्ठ सम्बन्ध था। बंगाल के एक मात्र माकपा नेता ऐसे थे जो खुले मंच पर खुद को मारवाड़ी कहा करते थे। एक संग्रामी नेता का यूँ चले जाना हमें काफी खला। ईश्वर की शक्ति के आगे हम सब लाचार हैं। आपको हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित।

— शम्भु चौधरी

कन्हैयालाल सेठिया के जन्मदिन ११ सितम्बर पर विशेषः

रूपान्तरण

स्व. कन्हैयालाल सेठिया

तम को पी कर दीपक की लौ
उसे उगल कर देती कज्जल।

तापित होकर तम बन जात
रतनारे नयनों का अंजन,
हो जाता पाषाण सुगन्धित
घिस जाता है जिस पर चन्दन,
कीचड़ में जड़ पर उठ ऊपर
बन रहता निर्लिप्त कमल–दल।

प्रीत बावरे शलभ शिखा को
चूम बनेंगे क्षर से अक्षर,
शतदल की पंखुरियाँ मुँदतीं
बन जाते हैं बन्दी मधुकर,
प्रतिमा क चरणोदक पीते
भक्त मान उसको गंगा–जल

शूल नहीं, ले जाती मालिन
सुमनों को आँचल में भर कर
प्रियतम का गलहार बनाती
उनका कोमल हृदय छेद कर,
बन जाती निर्दयता ममता
बनता स्वयं अमंगल मंगल

Caring for Land and People...

MANGILALL RUNGTA

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

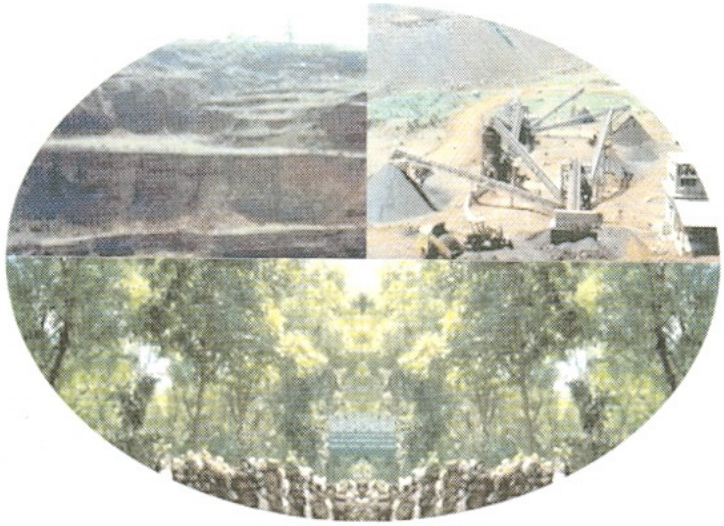

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***FERRO ALLOY*** *SILICO MANGANESE & FERRO MANGANESE*
- ***LIMESTONE POWDER***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

CENTRAL MINES OFFICE

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161;GRAM: "RUNGTA"
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in

FERRO ALLOY DIVISION

TULASIDIHA, MERAMANDLI -759121, DIST- DHENKANAL, ORISSA, INDIA
Phone: 06732-259231/ 241, Fax: 91-6764-234745

HEAD OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, August 2009
RNI Regd. No. 2868/68

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHABHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL